राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 36 अंक 11 फरवरी 2016 मूल्य 5 रु. पृष्ठ 36

राष्ट्रद्रोह के खिलाफ हल्ला बोल

'कश्मीर हो या गुवाहाटी, अपना देश अपनी माटी'

सील स्वर्णोत्सव की झलकियां...

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

संपादक मण्डल

आशुतोष

संजीव कुमार सिन्हा

अवनीश सिंह

अभिषेक रंजन

फोन : 011-23216298

ई-मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com

ब्लॉग :chhatrashaktiabvp.com

वेबसाईट :www.abvp.org

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए राजकुमार शर्मा द्वारा बी-50, विद्यार्थी सदन, क्रिश्चियन कॉलोनी, निकट पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली - 110007 से प्रकाशित एवं 102, एल. एस. सी., ऋषभ विहार मार्केट दिल्ली-92 से मुद्रित।

संपादकीय कार्यालय

''छात्रशक्ति भवन''

26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,

नई दिल्ली - 110002

अनुक्रमणिका

विषय	पृ. सं.
संपादकीय	04
अभिव्यक्ति के नाम पर देश तोड़ने की साजिश	05
राष्ट्रद्रोह के पीछे नक्सली–अलगाववादी गठजोड़	08
पूर्वोत्तर को घूमे बिना भारत भ्रमण व्यर्थ : हरेन्द्र प्रताप	09
राष्ट्रनिर्माण में भागी बने छात्र : मनोहर परिकर	11
रोहित वेमुला आत्महत्या: न्याय के बजाय राजनीति ?	12
'दलित–गैरदलित नहीं, राष्ट्रवाद बनाम वामपंथ है मुद्दा'	14
'नशामुक्ति – पर्यावरण युक्त स्वच्छ भारत' का संकल्प	16
युवा दिवस पर निकली ऐतिहासिक शोभयात्रा	17
'परिवर्तन के अग्रदूत की भूमिका निभायेगा राष्ट्रीय छात्रशक्ति'	18
तेजस्वी मन को दे नई दिशा – अभिषेक रंजन	20
छात्रा के दुर्व्यवहार के विरोध में अभाविप का प्रदर्शन	23
एकात्मता की राह पर 'अंतर राज्य छात्र जीवन' का प्रवास – अश्वनी परांजपे–राजवाड़े	24
छात्र संसद में भव्य राम मंदिर निर्माण को हरी झंडी	27
परिचर्चा : रोहित वेमुला आत्महत्या मामला	28
'सा विद्या या विमुक्तये' – डा. ललित बिहारी गोस्वामी	29
वाम राजनीति का विकृत चेहरा – सुनील आंबेकर	31

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में संसद हमले के आरोपी अफजल गुरू की बरसी मनाई गयी जिसमें काश्मीर की आजादी के नारे लगे। बात यहीं नहीं रुकी। "काश्मीर की आजादी तक, जंग चलेगी जंग चलेगी" के साथ ही "भारत की बरबादी तक, जंग चलेगी जंग चलेगी" के नारे लगे। "काश्मीर की आजादी" के नारे तो बरसों से लगते थे, "भारत की बरबादी" का ऐजेंडा, जिस पर आज तक बन्द कमरों में चर्चा होती थी, अब सार्वजनिक हो गया है। राष्ट्रवाद और राष्ट्रविरोध की परंपरागत बहस में यह नया आयाम है।

भारत को नष्ट करने का यह मंसूबा मार्क्स के सिद्धांत से सरोकार नहीं रखता। उस जनता के साथ भी इसका कोई सरोकार नहीं है जिसकी आजादी का यह दम भरते हैं। वामपंथी दर्शन सत्ता और संसाधनों पर कब्जा करना तो चाहता है लेकिन भारत की बरबादी की बात तो उसके झंडाबरदारों ने भी नहीं की। फिर यह नारा कहां से उपजा। जाहिर तौर पर यह पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई और उसके पिट्ठू हाफिज सईद का है। 9 फरवरी की घटना बताती है कि जेएनयू के कथित क्रांतिकारी अब उस रास्ते पर चल पड़े हैं जहां कठपुतलियों के धागे मास्को या बीजिंग से नहीं बल्कि इस्लामाबाद से हिलाये जाते हैं।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में आतंकी अफजल गुरू को शहीद साबित करने के लिए जुटे लोगों ने काश्मीर की आजादी के साथ ही भारत की बरबादी के इरादे भी जताये। इस पर विवाद हो सकता है कि हाफिज सईद के नाम से जिस ट्विटर खाते से समर्थन मिला वह असली है या नकली, लेकिन यह तो आइने की तरह साफ है कि वहां भारत की बरबादी के नारे लगे और जब उनके खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई की तो आरोपियों के समर्थन में हर्ष मंदर से लेकर प्रशांत भूषण तक और केजरीवाल से लेकर राहुल गाँधी तक सभी हाजिर थे।

देश के अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों में मौजूद इन स्वयंभू क्रांतिकारियों के समूहों की ओर से समर्थन की झड़ी लग गयी है। हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, जो पिछले दिनों रोहित वेमुला की आत्महत्या के बाद चर्चा में आया, पुणे का एफटीआईआई, वामपंथी गतिविधियों के केन्द्र जादवपुर विश्वविद्यालय समेत उन तमाम जगहों से समर्थन के स्वर उठने लगे हैं जहां हालिया घटनाओं में केन्द्र को घेरने की कोशिश हुई। इस पृष्ठभूमि में देखें तो इन घटनाओं के बीच एक पैटर्न नजर आता है। इससे साबित होता है कि यह अलग–अलग घटनाएं वास्तव में एक ही डिजाइन का हिस्सा हैं।

इस घटनाक्रम में कुछ लोगों का तर्क है कि मासूम नौजवानों पर देशद्रोह जैसी गंभीर धाराएं लगाना ज्यादती है। लेकिन एक जैसी इन घटनाओं पर लगाम लगाने की कोशिश कहीं से तो शुरू करनी ही होगी। जो लोग नौजवानों की मासूमियत की दुहाई दे रहे हैं क्या वे इस समूचे घटनाक्रम में अपनी राजनैतिक रोटियां सेकने वाले राजनेताओं को भी उतना ही मासूम मानते हैं। वहां नारे लगे– "अफजल हम शर्मिन्दा है, तेरे कातिल जिन्दा है"। कौन है अफजल का कातिल ? क्या अफजल को फाँसी का फैसला उसी सरकार ने नहीं लिया था जिसके सर्वेसर्वा राहुल गांधी थे ? आज वही राहुल गांधी "आपने पुकारा और हम चले आये" की अदा से जेएनयू जा पहुंचते हैं और "कातिल के जिन्दा" होने पर शर्मिन्दगी का नारा लगाने वाले उसी कातिल के साथ गलबहियां डाले मोदी सरकार को कोसने लगते हैं।

बीते दिनों, रोहित वेमुला की आत्महत्या के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के झण्डेवालान स्थित कार्यालय पर हुए प्रदर्शन को भी याद करें। लम्बे बालों वाले एक लड़के को जब एक पुलिसकर्मी ने तमाचा जड़ा तो वह गिर गया। कुछ चैनलों पर प्राइम टाइम में कॉमरेड पत्रकार तब तक इसे महिला प्रदर्शनकारियों पर पुलिस का कहर बताते हुए "खेलते" रहे जब तक कि घटना का असली वीडियो सोशल मीडिया पर नहीं आ गया।

कन्हैया कुमार की गिरफ्तारी के सांकेतिक निहितार्थ हैं। इसमें उन सभी के लिए कड़ा संदेश है जो भारत की मुख्य धारा को अपमानित और लांछित कर अपने ही नहीं, सीमा पार बैठे लोगों के स्वार्थों को पूरा कर रहे हैं। यह भूल है अथवा षड्यंत्र, यह फैसला तो अदालत करेगी। लेकिन जो लोग भी इसका हिस्सा बन रहे हैं, उन्हें यह अवश्य विचार करना चाहिये कि क्या वे वही कुछ तो नहीं कर रहे जो सीमा पार बैठे दुश्मन चाहते हैं।

अभिव्यक्ति के नाम पर देश तोड़ने की साजिश

विद्यार्थियों के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात करने वाले जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में नौ फरवरी की रात को कुछ छात्रों द्वारा देश विरोधी नारे लगाये गये। जानकर हैरानी तो होगी, लेकिन कैंपस में सक्रिय कुछ वाम विचारधारा वाले संगठन से जुड़े विद्यार्थियों ने न सिर्फ संसद हमले के दोषी अफजल गुरु की तीसरी बरसी पर सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया बल्कि प्रशासन की ओर से उनके इस कृत्य पर रोक लगाने पर कश्मीर की आजादी और देश को तोड़ने वाले नारे लगाए। इस दौरान जब अभाविप ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ के संयुक्त सचिव सौरभ शर्मा के नेतृत्व में आयोजन का विरोध किया तो न सिर्फ उनके खिलाफ नारेबाजी की गई बल्कि उन्हें डराने–धमकाने की भी कोशिश की गयी।

कैंपस में इस कार्यक्रम के आयोजन से जुड़े लोग अब चुप्पी साधे हुए हैं। दबी जुबान में अब यही सुनने में आ रहा है कि भारतीय संविधान उन्हें अभिव्यक्ति की स्वंतत्रता देता है और उसी के मद्देनजर अफजल गुरु व जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट के संस्थापक मकबूल भट्ट की याद में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया था। आयोजकों का कहना है कि यदि अभाविप की ओर से इस आयोजन को लेकर प्रशासन से मिली मंजूरी को अंतिम समय में रद्द न कराया जाता तो हंगामा इस हद तक नहीं बढ़ता।

मामले की हो रही जांच

कैंपस में देशविरोधी गतिविधियों की शिकायत पर कुलपति प्रो. एम. जगदीश कुमार ने हंगामे की जांच के आदेश दे दिए हैं। विश्वविद्यालय के चीफ प्रोक्टर की अध्यक्षता में गठित ये प्रोक्टोरियल जांच समिति न सिर्फ इस कार्यक्रम से जुड़ी सीसीटीवी व वीडियो फुटेज की जांच करेगी बल्कि इस दौरान आयोजन स्थल पर मौजूद विद्यार्थियों व सुरक्षाकर्मियों से भी बातचीत करेगी। प्रशासन की ओर से स्पष्ट किया गया है कि यदि इस विषय में लग रहे आरोपों में जरा भी सच्चाई पाई गई तो दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

कैंपस में देश विरोधी नारे लगाये जाने के मामले के तूल पकड़ने पर जेएनयू प्रशासन सख्त हो गया है। जेएनयू कुलपति द्वारा गठित जांच कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर जांच पूरी होने तक आठ छात्रों की शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने पर रोक लगा दी गयी है। तब तक वे गेस्ट के तौर पर छात्रावास में रहेंगे।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में लगे देश विरोधी नारे के मामले में वसंतकुंज उत्तरी थाने में देशद्रोह की धारा में मुकदमा दर्ज किया गया। भाजपा सांसद महेश गिरी की शिकायत पर यह मामला दर्ज किया गया। शिकायत में महेश गिरी ने कहा कि विश्वविद्यालय परिसर में संसद पर हमले के दोषी

अफजल गुरु की बरसी मनाने की घटना देश और संविधान विरोधी थी। उन्होंने कार्यक्रम आयोजित करने वाले डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स यूनियन (डीएसयू) और उसका सहयोग कर रहे ऑल इंडिया स्टूडेंट्स एसोसिएशन (आइसा), ऑल इंडिया स्टूडेंट्स फेडरेशन (एआइएसएफ) और स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआइ) को भारत के आंतरिक सुरक्षा को नुकसान पहुंचाने वाला बताया है।

वहीं, पुलिस का कहना है कि अभी अज्ञात के खिलाफ देशद्रोह की धारा–124–ए के तहत मामला दर्ज किया गया है। जांच में जिस तरह के साक्ष्य आएंगे, उसके अनुसार अतिरिक्त धाराएं जोड़ी जाएंगी। इन धाराओं के अंतर्गत ही दिल्ली पुलिस ने जेएनयू छात्र संघ अध्यक्ष कन्हैया कुमार को देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया है। पुलिस कस्टडी के दौरान हर पहलू से यह जांच करने की कोशिश हो रही है कि कहीं कन्हैया कुमार और उसके साथियों के तार किसी आतंकी संगठन से तो नहीं जुड़े हुए। पुलिस ने इस मामले में 6 और लोगों को आरोपी बनाया है, जिनके नाम उमर खालिद, आशुतोष कुमार, अर्निबाण भट्टाचार्य, राम नागा, अनंत प्रकाश हैं। फिलहाल किसी अन्य छात्र की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है।

भारतीय दंड संहिता की धारा-124ए के अनुसार यदि आरोपी लिख या बोल कर व्यक्त किए गए ऐसे शब्द या संकेत जोकि राष्ट्र की एकता, अखंडता और शांति को भंग करता है, उसे आजीवन कारावास तक की सजा का प्रावधान है।

पुलिस ने दर्ज मामले का आधार जवाहरलाल नेहरू

विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम की विडियो रिकॉर्डिंग को बनाया है। इसमें पता चल रहा है कि छात्रों ने देश विरोधी और भड़काऊ नारे लगाए थे।

घटना हैरान करने वाली - सौरभ

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय छात्र संघ के संयुक्त सचिव सौरभ शर्मा बताया कि कैंपस में जो हुआ वह सब हैरान करने वाला था। अक्सर कैंपस में कश्मीर की आजादी के समर्थन की बातें तो खूब सुनी थीं, लेकिन ऐसे खुलेआम दिल्ली पुलिस व विश्वविद्यालय सुरक्षाकर्मियों की मौजूदगी में देश विरोधी नारे लगाने की घटना बेहद हैरान करने वाली है।

सौरभ ने कहा कि उन्होंने जब इसका विरोध किया तो पहले तो शोर के जरिये उनकी आवाज दबाने की कोशिश हुई, फिर मारपीट का प्रयास हुआ। इसके बाद उन्हें एक छात्र ने कट्टा दिखाकर जान से मारने की धमकी दी। सौरभ ने इस घटना को देश की सुरक्षा के लिहाज से बेहद घातक बताया और यही कारण है कि वे प्रशासन से लगातार मांग कर रहे हैं कि इस मामले की जांच निष्पक्ष तरीके से कराई जाए और इस संबंध में देशद्रोह का मामला दोषियों के खिलाफ दर्ज कराया जाए।

सौरभ ने कहा कि ये वही वामपंथी हैं, जो दांतेवाड़ा में भारतीय जवानों के मारे जाने पर कैम्पस में जश्न मानते हैं, लेकिन आज फंसने के कारण देशभक्ति का ढोंग कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि देश का संविधान अभिव्यक्ति की आजादी के अन्तर्गत किसी को भी देश को बांटने और बर्बाद करने की बात करने का हक नहीं देता।

स्वतंत्रता का उठाया गलत फायदा : पुष्पेश पंत

इस मुद्दे पर जेएनयू में प्रोफेसर पुष्पेश पंत ने कहा है कि लोकतंत्र में हर किसी को बोलने की स्वतंत्रता होनी चाहिए लेकिन पिछले कुछ दिनों में जेएनयू में कुछ संगठनों ने लक्ष्मण रेखा पार की है। पंत ने कहा कि कुछ तत्व इस कैंपस का माहौल खराब करने की कोशिश कर रहे हैं और उनपर कार्रवाई करना जरूरी है। पंत ने आपातकाल जैसी किसी हालात को एक सिरे से खारिज करते हुए कहा कि यहां भी कानूनों का पालन पूरी सख्ती से होना चाहिए और अभिव्यक्ति की आजादी का नाजायज फायदा उठाने पर रोक लगनी चाहिए।

बढ़ा बवाल तो बदले छात्र नेताओं के सुर

वाम संगठनों के आयोजन का समर्थन करने वाले दल भी अब मामले से पल्ला झाड़ते नजर आ रहे हैं। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय की इस घटना की निंदा के बाद वामपंथी संगठनों ने बयान जारी कर कहा कि वे ऐसे किसी भी बयान का समर्थन नहीं करते हैं जो देश को बांटने और कश्मीर की आजादी की बात करता हो। हालांकि, अभी भी वे उस कार्यक्रम के आयोजन के पक्ष में है, जिसमें देश विरोधी नारे लगे थे। दूसरी ओर इस मुद्दे पर आक्रामक रुख अपनाते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने भी न सिर्फ राष्ट्रीय ध्वज के साथ कैम्पस में पैदल मार्च निकाला बल्कि देश विरोधी नारे लगाने वाले छात्रों पर कार्रवाई में ढिलाई बरतने का आरोप लगाते हुए कुलपति प्रो.एम जगदीश कुमार का पुतला भी फूंका। साथ ही कैम्पस में अफजल गुरू की बरसी मनाने की मंजूरी देने वाले डीन छात्र कल्याण कार्यालय को तुरंत भंग करने की मांग की।

इस विषय में जेएनयू अभाविप के संयुक्त सचिव सौरभ शर्मा का कहना है कि घटना के 48 घंटे में एकाएक वामपंथियों के सुर बदलने लगे हैं। इसकी वजह साफ है कि अब मामला देशद्रोह का है। इसका समर्थन करना महंगा पड़ सकता है।

पूर्व सैनिक हुए आहत

दिल्ली के जवाहर लाल विश्वविद्यालय में कथित तौर पर राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के विरोध में सेना के नेशनल डिफेंस अकादमी (एनडीए) से पास हुए 54वें बैच के अधिकारियों ने जेएनयू के वाइस चासंलर को चिट्ठी लिखकर साफ किया है कि अगर ऐसी ही हरकत जारी रही है तो वो अपनी डिग्री लौटा देंगे।

सैनिकों ने कहा, 'कैंपस राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का अड्डा बन गया है। जेएनयू में हुए देश विरोधी नारेबाजी के खिलाफ सैनिकों ने आवाज उठाई है। 1978 में पास हुए इन सैनिकों ने कहा है कि हमें खुद को जेएनयू से जुड़ा होने में दिक्कत हो रही है क्योंकि अब ये कैंपस राष्ट्र विरोधी गतिविधियों का अड्डा बन गया है।'

राष्ट्रद्रोह के पीछे नक्सली-अलगाववादी गठजोड़

नई दिल्ली। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में लगे भारत विरोधी नारे की साजिश से धीरे–धीरे पर्दा उठने लगा है। एक हफ्ते की जांच के बाद यह साफ हो गया है कि यह विवाद नक्सली और कश्मीरी अलगाववादियों के नापाक गठजोड़ का नतीजा है। भारतीय सत्ता को उखाड़ फेंकने का सपना देखने वाले नक्सलियों का इसी तरह के विचार रखने वाले कश्मीरी और पूर्वोत्तर के उग्रवादी व अलगाववादी गुटों के साथ गठजोड़ है।

देशविरोधी गतिविधियों में शामिल होने के आरोप में गिरफ्तार किए गए छात्र संघ अध्यक्ष कन्हैया कुमार ने पुलिस पूछताछ में इसका खुलासा किया है। कन्हैया ने बताया कि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में कार्यक्रम आयोजित करने की योजना उमर खालिद ने तैयार की थी। उसके कश्मीरी अलगाववादियों से सीधे संबंध हैं और संदिग्ध कश्मीरी युवक उमर से मिलने भी आते थे।

कन्हैया ने यह भी खुलासा किया कि 9 फरवरी के कार्यक्रम की योजना उमर खालिद ने कई महीने पहले बना ली थी। योजना के तहत 7 फरवरी को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय परिसर में 10 कश्मीरी युवक आए थे। ये युवक 9 फरवरी को कार्यक्रम में शामिल थे और उन्होंने भारत के टुकड़े करने और अफजल गुरू की शहादत में नारे भी लगाए थे। पुलिस उमर समेत इन कश्मीरी युवकों की तलाश कर रही है। पुलिस ने आरोपी छात्रों को जांच में सहयोग करने के लिए जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय प्रशासन को पत्र भी लिखा है लेकिन अब तक अन्य आरोपियों को गिरफ्तार नहीं किया जा सका।

सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार नक्सली लंबे समय से जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय कैंपस में सक्रिय हैं और इसके लिए उन्होंने डेमोक्रेटिक स्टूडेंट्स यूनियन (डीएसयू) के नाम से अपना छात्र संगठन भी बना रखा है। वैसे इस संगठन से फिलहाल कम छात्र ही जुड़े हैं। पिछले साल गढ़चिरोली में गिरफ्तार हेम मिश्र इसी डीएसयू से जुड़ा था। एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि डीएसयू के अलावा नक्सलियों ने कश्मीरी और पूर्वोत्तर के अलगाववादी गुटों के साथ मिलकर 'कमेटी फॉर रिलीज ऑफ पालिटिकल प्रिजिनर्स' नाम से एक संगठन भी बना रखा है। इसका काम सरकार के खिलाफ दुष्प्रचार करना और जेलों में बंद नक्सली व अलगाववादी नेताओं की रिहाई के लिए माहौल बनाना है। कुछ साल पहले तक कोई नक्सली नेता ही इस कमेटी का प्रमुख होता था, लेकिन बाद में एसएआर गिलानी को इसका प्रमुख बना दिया गया। नक्सली संबंधों के आरोप में जेल में बंद डीयू के प्रोफेसर एन. साईं बाबा भी इसके सदस्य रह चुके हैं।

सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और प्रेस क्लब में अफजल गुरु की फांसी को शहादत के रूप में मनाने का फैसला इन्हीं लोगों का था और भारत विरोधी नारे भी इन्होंने ही लगाए थे। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में लगे पोस्टर में डीएसयू के सभी नक्सली छात्रों के नाम छपे हैं, जिनकी तलाश की जा रही है।

■

पूर्वोत्तर को घूमे बिना भारत भ्रमण व्यर्थ - हरेन्द्र प्रताप

देश की एकता-अखंडता बनाये रखने में सहायक है एकात्मता यात्रा

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् द्वारा 'अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन' (SEIL) कार्यक्रम का आयोजन वर्ष 1966 से हो रहा है। यह प्रकल्प राष्ट्रीय एकता के लिए अत्यंत प्रभावकारी व उपलब्धिपूर्ण अभियान रहा है। वर्तमान परिदृश्य में जब प्रांतीय अलगाववाद की लपटों से देश आक्रांत है, वहां सील (SEIL) द्वारा आयोजित एकात्मता यात्रा की उपादेयता अत्यंत उपयोगी है।

इस वर्ष 'अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन' (सील) अपने 50 वर्षों की स्वर्णिम यात्रा का समारोह मना रहा है। अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन कार्यक्रम के तहत पूर्वोतर के 7 राज्यों (असम, त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड, अरूणाचल प्रदेश और मेघालय) के छात्रों की आठ टीमें देश के विभिन्न राज्यों में गयी और वहां की संस्कृति और व्यवहारों से परिचय प्राप्त किया।

एकात्मता यात्रा को लेकर पूर्वोत्तर छात्रों का एक दल झारखंड पहुंचा। जहाँ अभाविप द्वारा 'पूर्वोत्तर को जाने, भारत को जाने' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में युवाओं को संबोधित करते हुए बिहार विधान परिषद के सदस्य और अभाविप महामंत्री हरेंद्र प्रताप ने कहा कि पूर्वोत्तर हमारा अभिन्न अंग है और आगे भी रहेगा, लेकिन इसे देश की मुख्यधारा से जोड़ने की जरूरत है। आज भी यहां ट्रेनें बहुत कम चलती हैं। उन्होंने कहा कि यह हम सभी का कर्तव्य है कि पूर्वोत्तर से रिश्ता जोड़क कर देश की अखंडता को मजबूत करें। उन्होंने कहा कि देश की एकता और अखंडता के लिए युवाओं को एकजुट होकर काम करने की जरूरत है। इस क्रम में अभाविप का सील कार्यक्रम देश की सुरक्षा और एकता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। देश के ज्यादातर लोग पूर्वोत्तर को भूलते जा रहे हैं, जबकि भारत के सामरिक दृष्टिकोण से मेघालय, अरूणाचल, मिजोरम, सिक्किम, नागालैंड काफी महत्वपूर्ण है। लोग घूमने

भारत में जन्म लेने का है गर्व - बर्मन

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय मंत्री और प. बंग के प्रदेश संगठन मंत्री किशोर बर्मन ने कहा कि भारत में जन्म लेने का उन्हें गर्व है। उन्होंने कहा, 'भारत के साथ-साथ, मैं पूर्वोत्तर राज्य का व्यक्ति हूं इसके मुझे मान है। पूर्वोत्तर के सेवन सिस्टर को भारत का स्वर्ग कहा जाता है। उगलते सूरज को देखना है तो आपको अरूणाचल आना होगा। बादलों को देखना है तो मेघालय आना होगा। धरती के आभूषणों को देखना है तो मणिपुर आना होगा। सदभावना व शांति को देखना है तो सिक्किम आना होगा। उत्साह, उमंग व जोश को देखने के लिए मिजोरम, तो हजारों मंदिर के दर्शन के लिए त्रिपुरा की यात्रा जरूरी है। पूर्वोत्तर राज्य में ही सबसे ज्यादा 116 जनजातियां रहती हैं। पूर्वोत्तर राज्य ही ऐसे राज्य हैं जिस पर मुगल कभी कब्जी नहीं कर पाये। अंग्रेज भी यहां हुकूमत करने में कामयाब नहीं हो सके। आजाद हिंद वाहिनी ने अपना पहला तिरंगा मणिपुर में ही फहराया था।'

के लिए भारत के कई क्षेत्रों में जाते हैं लेकिन पूर्वोत्तर का भ्रमण नहीं करते। इस अंतर को पाटने की जरूरत है तभी देश में एकरूपता और आपसी भाईचारे का भाव बन पायेगा। उन्होंने कहा कि अगर कोई पूर्वोत्तर राज्यों में नहीं घूमा तो उसका भारत भ्रमण व्यर्थ है।

यात्रा के क्रम में उत्तर–पूर्व के छात्रों का एक दल पटना भी पहुंचा। पटना विश्वविद्यालय के साइंस कॉलेज परीक्षा भवन में अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। इस दौरान अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री गोपाल शर्मा (कोलकाता) ने कहा कि पूर्वोतर भारत का सामरिक महत्व होने के कारण देश में पूर्वोत्तर वर्षो से पिछड़ा होने के कारण अलगावादी शक्ति सक्रिय है। पूर्वोत्तर के युवाओं को जागरूक कर परिषद् देश की एकता एवं अखण्डता को मजबूती प्रदान कर रहा है। यह प्रकल्प भारत को सम्प्रभु बनाने की दिशा में उल्लेखनीय प्रयास कर रहा है।

जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों की समस्याएं एक जैसी

जम्मू–कश्मीर राज्य में सील यात्रा को लेकर पहुंचे छात्रों में राज्य की जानकारियों को लेकर खासा उत्साह देखने को मिला। प्राकृतिक सुंदरता की अनुपम छटा के साथ वहां के रहन–सहन को समझने का क्रम चला। भ्रमण दल के विदाई समारोह में छात्रों

का उत्साहवर्धन करते हुए पीएमओ राज्यमंत्री और पूर्वोत्तर के विकास मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा कि पूर्वोत्तर राज्यों और जम्मू–कश्मीर की समस्याएं एक जैसी हैं। उनका समाधान फास्ट ट्रैक का भागीदार ही संभव है। उन्होंने कहा कि विकास से ही शांति कायम हो सकती है। इस दिशा में अभाविप के प्रयासों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि यह छात्र संगठन युवाओं में अच्छे नागरिक के गुण समाहित करता है, जिसकी देश को काफी जरूरत है।

उत्तरी पूर्वी राज्यों को विकसित करने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अभियान का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि विकास का एजेंडा अन्य सभी एजेंडों पर हावी हो गया है। इस क्षेत्र के पास सिखाने के लिए बहुत कुछ है। अस्सी के दशक में बने में बना मिजोरम 92 फीसद साक्षरता दर के साथ केरल को चुनौती दे रहा है।

सील यात्रा के बारे बताते हुए अरूणाचल के प्रदेश संगठन मंत्री नीरव घेलानी ने कहा कि सील टूर के दौरान छात्र–छात्राएं तीन दिन तक परिवार में रहकर उस परिवार का खान–पान, वेशभूषा एवं संस्कृति को समझने का प्रयास करते हैं। अपने अनुभवों के आधार पर हम सब एक हैं, इस विश्वास को लेकर छात्र–छात्राएं अपने प्रांत में वापस जाकर राष्ट्रीय एकात्मता के आधार स्तम्भ बन जाते हैं।

राष्ट्र निर्माण में भागी बने छात्र - मनोहर पर्रिकर

महाराष्ट्र प्रांत के स्वर्ण जयंती अधिवेशन उद्घाटन सत्र को संबोधित करते रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर

मुंबई। युवा भारत की संकल्पना में छात्रों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। आज के युवा ही कल के देश को बेहतर दिशा में ले जाने में सक्षम हैं। मगर इसके लिए जरूरी है कि युवाओं को अपनी शक्ति का आभास हो और वो राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी निभायें।

उक्त बातें रक्षा मंत्री मनोहर पर्रिकर ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के महाराष्ट्र प्रांत के 50वें स्वर्ण जयंती अधिवेशन में कहीं। अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए देश के रक्षा मंत्री ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि उन्हें देश, समाज और परिवार को शब्द नहीं बल्कि भावों से समझना होगा.. तभी देश को एक सक्षम नागरिक मिल पायेगा। बता दें कि मुंबई के रिक्लेमेशन ग्राउंड में हुए इस अधिवेशन स्थल का नामकरण समाज सुधारक ज्योतिबा फूले के नाम पर रखा गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जाने माने फिल्म निर्देशक राजदत्त ने अपने छात्र जीवन के अनुभवों को साझा करते हुए अभाविप को कार्य विस्तार का मंत्र दिया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए मुंबई विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ संजय देशमुख ने कहा कि अभाविप के विगत 50 वर्षों की प्रदर्शनी कार्यकर्ताओं में ऊर्जा का संचार करेगी। अभाविप पूरे देश में राष्ट्र भक्ति की भावना को जागृत करने का काम कर रही है। प्रदर्शनी का नाम अभाविप के पूर्व कार्यकर्ता स्व. अशोक शिंदे के नाम पर किया गया है।

अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री सुनील आंबेकर 'भारत अनुरूप शिक्षा' विषय पर भाषण देते हुए कहा कि अगर देश में बदलाव चाहिए तो उसके लिए बाहरी तत्व ज्ञान की जरूरत इस देश को नहीं है। भारत को महाशक्ति बनाने की दिशा में जरूरी है कि युवा अपनी शक्ति को समझे। भारत को सिर्फ महाशक्ति ही नहीं बल्कि उत्कृष्ट राष्ट्र भी बनाना है।

शोभायात्रा के उपरान्त खुले अधिवेशन को संबोधित करते हुए परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री विनय बिदरे ने कहा कि कलबुर्गी और पानसरे की हत्या की निंदा सबसे पहले अभाविप ने की थी। सहिष्णुता हमारे रगों में है। वहीं, पूर्व कार्यकर्ताओं के एकत्रीकरण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फणनवीस ने कहा कि सामाजित कार्यों में खुद को न्यौछावर कर राष्ट्र निर्माण के लिए कार्यकर्ता निर्माण का काम अभाविप पिछले 67 वर्षों से कर रही है।

समारोह के मंच पर असम और नागालैंड के राज्यपाल महा. पद्मनाभ आचार्य, महाराष्ट्र सरकार के शिक्षा मंत्री विनोद तावड़े और महाराष्ट्र सरकार के सहकार मंत्री चंद्रकांत पाटिल भी मौजूद रहे। अधिवेशन में समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बनकर कार्य करने के लिए सामाजिक क्षेत्र में मिलिंद थत्ते और संदीप जाधव को सम्मानित किया गया। ■

रोहित वेमुला आत्महत्या: न्याय के बजाय राजनीति ?

रोहित वेमुला की आत्महत्या का मामला लगातार तूल पकड़ता जा रहा है। हैदराबाद विश्वविद्यालय के कुलपति अप्पा राव के बेमियादी छुट्टी पर चले जाने के बाद उनकी जगह नियुक्त किये गये नये अंतरिम कुलपति प्रो. विपिन श्रीवास्तव के विश्वविद्यालय परिसर स्थित प्रशासनिक भवन पहुंचने पर छात्रों ने विरोध किया। प्रदर्शनकारी छात्रों की मांग है कि व्यवस्था परिवर्तन लाने के लिए 'रोहित कानून' को लाकर उसे लागू किया जाये।

बता दें कि विश्वविद्यालय ने छात्रों का निलंबन वापस लेने के साथ ही रोहित के परिवार को आठ लाख रुपये की आर्थिक मदद का भी ऐलान किया था, लेकिन परिजनों ने अनुग्रह राशि यह कह कर लेने से इंकार कर दिया कि रोहित की आत्महत्या के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की जाये।

मामले की गंभीरता को देखते हुए केंद्र सरकार ने शोधार्थी रोहित वेमुला आत्महत्या मामले की जांच इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश अशोक कुमार रूपनवाल को सौंपी है। वह अपनी रिपोर्ट तीन महीने में सौंपेंगे। दूसरी तरफ हैदराबाद विश्वविद्यालय के तीन शिक्षकों ने छात्रों के समर्थन में बृहस्पतिवार को एक दिन की भूख हड़ताल की। शिक्षकों का कहना था कि शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियों को बहाल करने के लिए कुलपति अप्पा राव तथा इंचार्ज वीसी विपिन श्रीवास्तव को पद से हटाया जाए। उस्मानिया विश्वविद्यालय का एक शिक्षक भी इस प्रदर्शन में शामिल हुआ।

मामले के तूल पकड़ने के बाद मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने एक फैक्ट फाइंडिंग कमेटी को विश्वविद्यालय भेजा था। इसी समिति की सिफारिश पर एक सदस्यीय न्यायिक आयोग के गठन का फैसला लिया गया है। मंत्रालय के अधिकारियों के अनुसार जस्टिस (सेवानिवृत्त) अशोक उन परिस्थितियों को देखेंगे और तथ्यों का पता लगाएंगे, जिसकी वजह से रोहित को आत्महत्या जैसा कदम उठाना पड़ा।

रोहित आत्महत्या मामले में सियासत तेज हो गयी है। आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने जहां केंद्रीय मंत्री बंडारू दत्तात्रेय पर मामले में लगे आरोपों को लेकर मोदी सरकार को घेरना शुरू कर दिया है। केंद्रीय मंत्री पर आरोप लगने के बाद कांग्रेस मोदी सरकार पर हमलावर है। कांग्रेस ने सरकार को दलित विरोधी बताते हुए बंडारू दत्तात्रेय का इस्तीफा मांगा है। सीपीएम ने भी केंद्र सरकार को घेरने की कोशिश की है। वहीं, वाईएसआर कांग्रेस ने पूरे मामले की सीबीआई जांच की मांग की है। जबकि दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने इस घटना को लोकतंत्र की हत्या बताते हुए बंडारू दत्तात्रेय को बर्खास्त करने की मांग की है।

बतादें कि रोहित वेमुला हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय से 'विज्ञान प्रौद्योगिकी और समाज' विषय पर शोध कर रहे थे। डाक्यूमेंट्री 'मुजफ्फरनगर

बाकी है' के प्रदर्शन तथा याकूब मेनन की फांसी पर नमाज–ए–जनाजा के आयोजन को लेकर दलित छात्र संगठन और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (अभाविप) के बीच हुए विवाद मामले में रोहित और पांच अन्य छात्रों को छात्रावास से निलंबित कर दिया गया था। इस कारण वह परेशान थे। छात्रावास से निकाले जाने के बाद ये छात्र परिसर में ही खुले आसमान के नीचे धरना दे रहे थे। रोहित की लाश के पास से मिले सुसाइड नोट में लिखा था, 'मेरी आत्महत्या के लिए कोई जिम्मेदार नहीं है। मैं अपनी आत्मा और अपने शरीर के बीच दूरी महसूस कर रहा था और मैं खुद को एक दैत्य जैसा महसूस कर रहा हूं। इस लिए मैं यह कदम उठा रहा हूं।'

इस पूरे मामले में अभाविप ने स्पष्ट जांच की मांग की तथा अंबेडकर छात्र संगठन (ASA) तथा स्टूडेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया (SFI) पर मानसिक तौर पर रोहित को प्रताड़ित करने का भी आरोप लगाया। परिषद् का कहना है कि रोहित ने अपने सुसाइड नोट में किसी को भी जिम्मेदार नहीं ठहराया था। बल्कि उसने उस विचारधारा पर सवाल खड़े किए थे कि वह उसे गुमराह कर रही थी।

अब तक 9 छात्र कर चुके हैं सुसाइड

हैदराबाद विश्वविद्यालय में 10 साल में अब तक 9 छात्रों ने सुसाइड किया है। छात्र संघ अध्यक्ष जुहैल के. पी. का कहना है कि इससे पहले आठ छात्रों द्वारा आत्महत्या करने की घटना कोई छोटी बात नहीं है। ऐसे में रोहित की मौत जातिगत भेदभाव के कुचक्र को ही दर्शाता है। वहीं, अन्य छात्रों ने भी परिसर में दलित और गैर–दलित वर्ग के बीच पुरानी खींचतान होने की बात कही है। इन छात्रों के मुताबिक सरकार आर्थिक तौर पर तो मदद करती है लेकिन फेलोशिप मिलने में देर होती है। जिससे कई छात्रों को अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ती है। अभी तक हुई इन आत्महत्याएं ना तो उजागर हो सकी और ना ही यूपीए सरकार ने इस विषय में कोई ठोस कदम उठाये। जिससे इन घटनाओं पर रोक लगती। ■

अभाविप के मुंबई कार्यालय पर हमला

मुंबई। रोहित वेमुला आत्महत्या मामले में कुछ शरारती तत्वों ने मुंबई के उपनगर माटुंगा स्थित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के कार्यालय पर हमला किया। नकाब और काला चश्मा पहने लगभग छह की संख्या में अज्ञात लोगों ने कार्यालय में जमकर तोड़–फोड़ की। इस दौरान हमलावरों को रोकने गये अभाविप कार्यकर्ताओं की भी पिटाई की गयी।

हमले में घायल अभाविप कार्यकर्ता फ्रांसिस डिसूजा को गहरी चोटे भी आयी हैं। फिलहाल हमलावरों की पहचान और उनकी संबद्धता का पता नहीं चल पाया है। मगर माना जा रहा है कि हैदराबाद विश्वविद्यालय के दलित शोध छात्र रोहित वेमुला की आत्महत्या के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करने वाले लोगों ने ही इस घटना को अंजाम दिया।

अभाविप के कोंकण प्रांत संगठन मंत्री यदुनाथ देशपांडे ने कहा कि हमलावरों के हाथों में लाठियां और हॉकी स्टिक थे, और वे माटुंगा स्थित अभाविप के कार्यालय में घुस गए और वहां मौजूद फर्नीचर तोड़ने लगे। हमलावरों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी व बंडारू दत्तात्रेय के खिलाफ नारेबाजी की और उसके बाद वहां से भाग गए।

देशपांडे ने मीडियाकर्मियों से कहा, 'हम हमले की कड़ी निंदा करते हैं। दो दिन पूर्व हमारे बेंगलुरू स्थित कार्यालय पर भी इसी तरह का हमला हुआ था। इससे स्थिति खराब हो गई है और हम केंद्र व राज्य सरकारों से आग्रह करते हैं कि ऐसे तत्वों पर नियंत्रण के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएं।' ■

साक्षात्कार

दलित - गैरदलित नहीं, राष्ट्रवाद बनाम वामपंथ है मुद्दा - सुशील कुमार

आज देश भर में हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्र रोहित वेमुला की आत्महत्या की चर्चा जोरों पर है। रोहित के आत्महत्या के बाद दलित और गैर दलित जैसे मुद्दे गर्म हो गये हैं। इस दौरान हर कोई दलित समाज का पैरोकार होने का दावा कर रहे हैं। जबकि चेन्नई में तीन छात्राओं की आत्महत्या की घटना पर हर किसी के मुंह सिले हुए है। हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय परिसर की वर्तमान हालात तथा विश्वविद्यालय में पढ़ाई व छात्रों के भविष्य को लेकर क्या स्थिति बन रही है। **इस पूरे मामले पर राष्ट्रीय छात्रशक्ति संवाददाता ने हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्र एन. सुशील कुमार से बात की।** बता दें कि सुशील कुमार अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय) के अध्यक्ष भी हैं। प्रस्तुत है एन. सुशील कुमार के साथ बातचीत के अंश–

आंबेडकर स्टूडेंट एसोसिएशन के छात्रों द्वारा आपके साथ मारपीट किये जाने के मामलों को आप कैसे देखते हैं?

यह विवाद याकूब मेनन की फांसी के समय का है। अंबेडकर स्टूडेंट एसोसिएशन के छात्रो द्वारा याकूब मेनन को हीरो के रूप में प्रस्तुत कर रहे थे। उसके समर्थन में नमाजे जनाजा किया गया। **तुम कितने याकूब मारोगे–हर घर से याकूब निकलेगें।** **याकूब तेरे खून से इकंलाब निकलेगा।** जैसे नारे लगाए गए। पोस्टरबाजी की गई। उसी क्रम में वे लोग याकूब के समर्थन में सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक पर तरह–तरह कि टिप्पणी की गई। मैंने जब इस टिप्पणी को देखा तो मुझे लगा कि ये सब गलत हो रहा है। इस मुद्दे को गलत तरीके से पेश किया जा रहा है, तो मैंने उक्त टिप्पणी के विरूद्ध में टिप्पणी की। अंबेडकर स्टूडेंट एसोसिएशन के छात्र क्रोधित होकर चार अगस्त के रात में करीब 30–35 संख्या में मेरे छात्रावास पर आए, भद्दी–भद्दी गालियां बकने लगे और बोलने लगे कि तुमने मेरे द्वारा कि गई टिप्पणी के विरूद्ध में टिप्पणी कैसे कर दी। तो मैंने कहा कि भैया आपलोग अंदर आइए बैठकर इस पर बहस कर लेते हैं। वे लोग मुझे गाली–गलौज करते हुए अपने साथ चलने के लिए कहने लगे। साथ ही मेरे साथ मार–पीट करना शुरू कर दिया। मुझे बुरी तरह से पीटा और जबरजस्ती माफीनामा लिखवाया गया।

आप बुरी तरीके से पीटने के बाद उन लोगों के खिलाफ कोई शिकायत आपने पुलिस या विश्वविद्यालय प्रशासन से नहीं की ?

जी हां! उन लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज किया गया। मैं तो अस्पताल में भर्ती हो गया था। मेरे परिवार वालों ने न्याय के लिए उच्च न्यायालय से गुहार लगाई। जांच समिति गठित हुई, जांच में रोहित सहित पांच छात्रो को मेरे साथ की गई मारपीट की घटना में दोषी पाया गया और उन पांचों को छात्रावास से निलंबित किया गया। उसके कई दिनों बाद विगत 17 जनवरी को रोहित वेमुला ने

आत्महत्या कर ली जिससे यह मुद्दा काफी उछल गया। जिस पर आज तक बहस जारी है।

रोहित वेमुला की आत्महत्या के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे ?

मुझे रोहित वेमुला की आत्महत्या पर बेहद अफसोस है। हमने अपना एक होनवार साथी को खो दिया। हालांकि रोहित के सुसाइड नोट में किसी का नाम नहीं लिखा गया है और न ही अपनी आत्महत्या के लिए किसी को जिम्मेदार ठहराया है। रोहित की आत्महत्या किन परिस्थितियों में हुई इसके पीछे क्या कारण है? इसकी हम निष्पक्ष जांच की मांग करते हैं। ताकि हमलोगों के बीच रोहित की आत्महत्या की सच्चाई सामने आ सके।

आपके विश्वविद्यालय की घटना को दलित बनाम गैर दलित कहा जा रहा है। आप इस पर कोई टिप्पणी करना चाहेंगे ?

यह दलित बनाम गैर दलित का कोई मुद्दा ही नहीं है। बेवजह इस पर तुल दिया जा रहा है। मैं कई सालों से अभाविप से जुड़ा हूं। मुझे तो मेरे साथ रहने वालों कि जात अभी तक पता नहीं है। वस्तुतः यह मुद्दा राष्ट्रवाद बनाम वामपंथियों का है। हम तो राष्ट्रनिर्माण की कल्पना पर विश्वास रखते हैं। जाति–पाति की सोच भी मन में कभी नहीं आती है।

आप दोबारा विश्वविद्यालय जाने में कोई असुरक्षा की भावना महसूस नहीं करते हैं?

इस तरह की घटना होते रहती है। इन सब के कारण मैं अपनी पढ़ाई क्यों छोड़ दूं? और रही बात असुरक्षा की तो आये दिन हमें इन घटनाओं से गुजरना पड़ता है। खासकर हमारे छात्र संगठन अभाविप के कार्यकर्ताओं के साथ। मैं सरकार और विश्वविद्यालय प्रशासन से मांग करता हूं कि मेरे साथ जो घटना घटित हुई और किसी अन्य छात्रों के साथ न हो।

वर्तमान समय में विश्वविद्यालय परिसर विद्या का मंदिर न होकर राजनीतिक अखाड़ा बन गया है। आपकी इसमें क्या राय है?

अभी जो वर्तमान हालात है और जिस तरह की राजनीतिक गतिविधियां चल रही है। हम कह सकते हैं कि विश्वविद्यालय परिसर विद्या का मंदिर न होकर राजनीतिक अखाड़ा बन गए हैं। महाविद्यालय / विश्वविद्यालय परिसर को दलगत राजनीति से दूर रखना चाहिए। ■

प्रिय मित्रों,

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का फरवरी 2016 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों तथा खबरों का संकलन किया गया है। आशा है यह अंक आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा।

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव एवं विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई–मेल पर अवश्य भेजें।

"छात्रशक्ति भवन"

26, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग

नई दिल्ली – 110002

फोन : 011–23216298

ई–मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com

वेबसाईट : www.abvp.org

'नशामुक्त - पर्यावरण युक्त स्वच्छ भारत' का संकल्प

भोपाल। राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने मध्यभारत प्रांत में विभिन्न स्थानों पर सूर्य नमस्कार, नशा मुक्ति, पर्यावरण स्वच्छता जैसे कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस दौरान लोगों को नशे से दूर रहने के साथ पर्यावरण संरक्षण को लेकर जागरुक किया और संकल्प भी कराया।

इस क्रम में भोपाल के आर. के. डी. एफ विश्वविद्यालय में कुलपति डॉ वी. के. शेट्टी की अध्यक्षता में बेहतर शिक्षा की दिशा विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। जबकि ग्वालियर में 'युवा : सशक्त देश की संकल्पना का आधार' विषयक छात्र सम्मेलन किया गया, जिसमें प्रांत अध्यक्ष डॉ. नितेश शर्मा एवं प्रांत संगठन मंत्री विजय अठवाल मुख्य वक्ता रहे।

स्वामी विवेकानन्द जयन्ती के अवसर पर इन्दौर में वाद–विवाद प्रतियोगिता, वाहन रैली, रक्तदान शिविर तथा नर्मदापुर में 'रन फॉर सेव नर्मदा' को लेकर मैराथन का आयोजन किया गया। जिसमें अखिल भारतीय आयाम प्रमुख नागराज रेड्डी, मध्य क्षेत्रीय संगठन मंत्री प्रफुल्ल आकांत, राष्ट्रीय संयोजक एस. एफ. डी. सचिन दवे एवं जनअभियान परिषद के प्रमुख सलाहकार शशिकांत कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इस कार्यक्र में कुल शामिल छात्रों की संख्या पाँच हजार से ज्यादा रही।

वहीं, उज्जैन में प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता और शुजालपुर में दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रांत मंत्री रोहिन राय ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए 'नशा मुक्त – पर्यावरण युक्त' स्वच्छ भारत को लेकर लोगों को जागरूक करने के संबंध में जानकारी देते हुए पूर्ण सुरक्षित समाज के निर्माण में योगदान देने का आग्रह किया। स्वामी विवेकानंद जयंती के अवसर पर मध्यभारत प्रांत के 34 जिलो में कुल 27 हजार 238 से अधिक छात्रों ने विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। ■

'विवेकानंद सभी के प्रेरणा स्रोत'

उधमपुर। अभाविप की ऊधमपुर इकाई द्वारा युवा दिवस पर रैली का आयोजन किया गया, जिसमें काफी संख्या में स्कूली बच्चों ने हिस्सा लिया। इस दौरान सफेद कपड़े पहने बच्चों ने अपने सीने पर विवेकानंद की फोटो और पीठ पर उनके वचनों के लिखे तख्ते लगा रखे थे।

बच्चों को स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व से परिचित कराते हुए परिषद् के नगर मंत्री एवं प्रदेश कार्य समिति सदस्य अर्जुन खजूरिया ने कहा कि विवेकानंद सभी के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं और हमें उनकी द्वारा दिखाये गये राह पर जीवन भर चलना चाहिए। उनका हमेशा से युवाओं से कहना था कि हमें सदैव सकारात्मक सोच से ओत–प्रोत रहना चाहिए, तभी जीवन में हर चाहा काम हमारे अनुरूप प्रतित होता है। उन्होंने कहा कि देश, समाज और अन्य लोगों के प्रति उदार मन रखने वाला ही श्रेष्ठ व्यक्ति कहलाने का अधिकारी होता है।

युवा दिवस पर निकली ऐतिहासिक शोभयात्रा

राजस्थान (पाली)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् पाली के तत्वाधान में विवेकानंद जयंती के उपलक्ष में युवा सप्ताह महोत्सव 2016 के तत्वाधान में पाली शहर में ऐतिहासिक शोभायात्रा जिसमें 'एक किलोमीटर' लंबी रैली एक हजार स्कूली बच्चे, 10 ट्रेक्टर, 12 जीप, 200 के करीब स्वयंसेवी संस्था के कार्यकर्ताओं ने शहर को एकता का सन्देश दिया। शोभायात्रा को महामण्डलेश्वर ाती महाराज, राजस्थान विधानसभा उपमुख्य सचेतक मदन राठौड़ अभाविप प्रदेश सहमंत्री निशान्त दवे व पाली विधायक ज्ञानचंद पारक ने भगवा ध्वज दिखाकर शोभायात्रा को रवाना किया। विवेकानंद सर्कल से आरम्भ हुई शोभायात्रा बैंड–बाजों की धुन के साथ बांगड़ स्कूल, अहिंसा सर्कल, सूरजपोल, अम्बेडकर सर्कल, सोमनाथ मंदिर, उदयपुरिया बाजार, सराफा बाजार, पुराना बस–स्टैंड होते हुए पुनः विवेकानंद सर्कल पर विसर्जित हुई। इस दौरान शोभायात्रा का विभिन्न सामाजिक संगठनों व शहरवासियो द्वारा पुष्प वर्षा कर शोभायात्रा का स्वागत किया गया। शोभायात्रा के दौरान सभी युवाओं ने सर पर केसरिया साफा पहन रखा था। साथ ही छात्राओं ने केसरिया पोशाक पहनकर माहौल को पूरी तरह भगवामय कर दिया। इस दौरान छात्र–छात्राओं ने विवेकानंद जी के गगनभेदी नारे लगाए।

किश्तवाड़। युवा दिवस के मौके पर जम्मू–कश्मीर के किश्तवाड़ जिले में विवेकानंद के संदेशों की प्रासंगिकता विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में युवाओं को संबोधित करते हुए भारतीय विद्या मंदिर के प्राचार्य राम सेवक शर्मा ने कहा कि हमें पश्चिमी रीति–रिवाज और संस्कृति को छोड़कर अपनी भारतीय संस्कृति पर चलना चाहिए, देश को जीवित रखने का एक सही मार्ग यही है कि अपनी संस्कृति को जीवित रखा जाये। वहीं, अभाविप के पूर्व प्रदेश संगठन मंत्री पवन शर्मा ने संगठन के कार्यों की जानकारी देते हुए कहा कि परिषद् लगातार शिक्षा से जुड़ी समस्याओं को उठाता रहा है। साथ ही छात्रों की परेशानियों को दूर करने के लिए संघर्ष भी किया जाता है।

अभाविप देगी 'युवा चेतना पुरस्कार - 2016'

सोलन। युवा वर्ग को शिक्षा के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों के सम्मान स्वरूप और भविष्य के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 'युवा चेतना अवार्ड–2016' देने जा रही है। इसमें 18 से 25 वर्ष तक का कोई भी युवा भाग ले सकता है और राज्य स्तर पर चयनित होने वाले विद्यार्थी को अभाविप की ओर से दो लाख रुपये का ईनाम दिया जाएगा। अभाविप के संगठन मंत्री नवनीत गुलेरिया ने यहां जारी बयान में बताया कि अभाविप व्यवसायिक शिक्षा लेने वाले विद्यार्थियों में शिक्षा के साथ–साथ सामाजिक कार्य, पर्यावरण को बचाने के लिए कोई आधुनिक समाधान, बिजली का सदुपयोग सहित छोटी सी उम्र में ही किसी भी क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि प्राप्त करने वाले युवाओं को इस अवार्ड से सम्मानित करेगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड के लिए इच्छुक युवा 26 जनवरी तक उनकी वेबसाईट पर निःशुल्क आवेदन कर सकते हैं। गुलेरिया ने बताया कि इसके बाद 10 फरवरी को राज्य स्तर पर इंटरव्यू लिया जाएगा और राष्ट्रीय स्तर पर इंटरव्यू 29 फरवरी को देश के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि संगठन की इस योजना में राज्य स्तर पर पुरस्कार जीतने वाले को दो लाख रुपये व राष्ट्रीय स्तर पर डेढ़ लाख रुपये का नकद पुरस्कार दिया जाएगा।

परिवर्तन के अग्रदूत की भूमिका निभायेगा 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' -दत्तात्रेय होसबाले

विशेषांक का लोकार्पण करते (बाएं से) अभाविप के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्रीनिवास, वरिष्ठ पत्रकार राम बहादुर राय, रा. स्व. संघ के सह सरकार्यवाह मा. दत्तात्रेय होसबाले, राष्ट्रीय छात्रशक्ति के संपादक आशुतोष व अभाविप दिल्ली प्रदेश अध्यक्षा मनु कटारिया

नई दिल्ली। राष्ट्रीय छात्रशक्ति विशेषांक 'युवा भारत – समर्थ भारत' अपने तथ्यों और तत्वों के साथ स्वामी विवेकानन्द के वचनों को समाज में प्रसारित करने का माध्यम बनेगा। मकर संक्रांति के उपलक्ष्य पर विशेषांक का लोकार्पण होना परिवर्तन का सूचक बनते हुए युवाओं को समाज और राष्ट्र की बेहतरी के लिए प्रोत्साहित करने का निमित्त बनेगा। परिवर्तन की दिशा में अग्रदूत की भूमिका निभाते हुए छात्रशक्ति युवाओं में भी अपनी भूमिका के निर्वाह का भाव जगायेगा। यह बातें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह–सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की पत्रिका राष्ट्रीय छात्रशक्ति के विशेषांक 'युवा भारत–समर्थ भारत' के लोकार्पण के अवसर पर कही।

दीनदयाल शोध संस्थान सभागार में अपने संबोधन में श्री होसबाले ने कहा कि अनुशासन के बंधन कई बार परिवर्तन लाने में बाधक होते हैं। जबकि छात्र संगठन परिवर्तनशील होते हैं और समय–समय पर उनमें परिवर्तन होने आवश्यक होते हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं के अन्दर परिवर्तन का भाव स्वाभाविक होता है। इस क्रम में छात्रशक्ति के उद्देश्य को बताते हुए उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय छात्रशक्ति को एक परिवर्तनकारी समूह बनाकर, अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने की प्रेरणा इस विशेषांक से मिलेगी।

दत्तात्रेय होसबाले ने कहा कि पूर्व में भी राष्ट्रहित में परिवर्तन के राजनीतिक विषयों को भी छात्रशक्ति पत्रिका ने मुखर तौर पर उठाया है। जिसमें अनुच्छेद–370 और अवैध बांग्लादेशी घुसपैठ पर स्वतंत्रता से लिखा भी गया है। सह–सरकार्यवाह ने माना कि विद्यार्थी परिषद द्वारा पूरे देशभर में विभिन्न

भाषाओं में छात्र पत्रिका निकालना परिवर्तन लाने के लिए वैचारिक आंदोलन का हिस्सा है। इस क्रम को आगे भी बढ़ाये रखने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय छात्रशक्ति पत्रिका के संपादक आशुतोष भटनागर ने विशेषांक प्रस्तावना रखते हुए बताया कि अभाविप आंदोलनकारी जुझारू संगठन है। ऐसे में विश्वविद्यालय परिसर में छात्रों को अक्सर संवाद की जरूरत रहती है इसके लिए परिसर में वर्तमान कार्यकर्ताओं को राष्ट्रीय दृष्टि देने, उपयोगी साहित्य–सामग्री देने के लिए पत्रिका के माध्यम से कार्य किया जा रहा है। स्वामी विवेकानन्द की जयंती से विशेषांक को जोड़कर 'युवा भारत – समर्थ भारत' नाम देने का मकसद देश के युवा, भारत देश और युवा शक्ति के बल पर समर्थ देश की कल्पना पर विचार करना है।

इस क्रम में वरिष्ठ पत्रकार रामबहादुर राय ने अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्रीय छात्रशक्ति पत्रिका के विकास पर आधारित यह वृत्तचित्र (डॉक्युमेंट्री) हमें विद्यार्थी परिषद् के इतिहास में ले जाती है। जब विद्यार्थी परिषद ने पहली बार राष्ट्रीय छात्रशक्ति पत्रिका को 1978 में निकाला था। उस समय विद्यार्थी परिषद को अपने विचार रखने के लिए एक मंच की जरूरत थी, जो इस पत्रिका से मिला। आने वाले वर्षों में विद्यार्थी परिषद के लिए छात्रशक्ति क्या करे, इस पर विचार की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि छात्रशक्ति की वेबसाईट भी शुरु करनी चाहिए। यह पत्रिका केवल अपने रंगीन पृष्ठ, डिजाइन के लिए जाने जाये इससे अच्छा वह अपनी सामग्री के द्वारा अपनी पहचान बनाये। लोकार्पित विशेषांक में स्वामी विवेकानन्द को लेकर समर्थ भारत की कल्पना की गई है, जो सराहनीय है।

इससे पूर्व कार्यक्रम के आरम्भ में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की पत्रिका 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' की विकास यात्रा को एक फिल्म के द्वारा कार्यक्रम में प्रदर्शित किया गया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के इतिहास, छात्र आंदोलनों का विवरण, छात्र संघ के प्रवाहमय कार्यों का पत्रिका में उल्लेख विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं के माध्यम से प्रदर्शित किया गया।

■

पंजाब में डेढ़ लाख विद्यार्थियों को जोड़ेगी अभाविप

संगरूर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, पंजाब की तीन दिवसीय सालाना बैठक में परिषद् से ज्यादा से ज्यादा छात्रों को जोड़ने की योजना पर चर्चा हुई। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पंजाब की आगामी गतिविधियों का एजेंडा तैयार करना व विद्यार्थी परिषद का संगठन ढांचा मजबूत करना रहा। बैठक के दौरान वर्ष 2016–17 में होने वाले संगठन के आंदोलन और रचनात्मक गतिविधियों की रूपरेखा तैयार की गई। इस बैठक में 17 जिलों के पदाधिकारियों ने भाग लिया।

प्रदेश मंत्री विकास दुआ ने कहा कि 2016 का पंजाब प्रांत का अधिवेशन फरवरी के दूसरे सप्ताह में लुधियाना में होगा। इस प्रांतीय अधिवेशन में प्रदेश अध्यक्ष व प्रदेश मंत्री का चुनाव किया जाएगा। उन्होंने कहा कि परिषद को मजबूत करने के लिए वर्ष 2016 में गांवों व शहरों से लगभग 1.50 लाख विद्यार्थियों को परिषद से जोड़ने का लक्ष्य हैं। नौजवानों को पंजाबी विरसे से जोड़ने के लिए 18 फरवरी को जालंधर में विरसा संभाल सम्मेलन करवाया जाएगा। इसके साथ ही नशा, सुरक्षा, शिक्षा व परिवर्तन के मुद्दे को लेकर मार्च में परिषद द्वारा विधानसभा के समक्ष प्रदर्शन किया जाएगा।

इस मौके पर प्रदेश संगठन मंत्री सूरज भारद्वाज, प्रदेश अध्यक्ष डॉ. कृष्ण गोपाल, उपाध्यक्ष गुरविंदर सिंह, डॉ. शिव कुमार डोगरा और राजा धीमान आदि मौजूद रहें।

■

तेजस्वी मन को दे नई दिशा

✍ अभिषेक रंजन

पिछले दिनों आईआईटी वाराणसी के विद्यार्थियों को संबोधित करने का अवसर मिला। ग्रामीण क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण सरकारी शिक्षा के लिए प्रयासरत संस्था द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में अपनी बात रखने और सवाल–जबाब का सत्र समाप्त होने के बाद इंजीनियरिंग अंतिम वर्ष का एक छात्र पास आया और बड़े ही जोश से बोला, सर मेरा प्लेसमेंट तो हो गया है, अच्छा पैकेज भी मिलेगा लेकिन मेरा मन नही है इस नौकरी को करने का मुझे तो गाँव के बच्चों पर ही काम करना है। वहां मुझे पैसे भले कम मिले, सुकून और बेहद खुशी मिलेगी। वह बहुत उत्साह से अपनी बात बताता रहा और मै सुनता रहा, समझता रहा, अपने अनुभवों को बताता रहा। बातचीत जब खत्म हुई तो आश्चर्य नही हुआ, बस उसकी जीवटता और जुनूनी संकल्प को सही राह मिले, इसकी दुआएं करने लगा।

अभी देश के किसी भी शहर में चले जाए, ओला कैब और ओयो रूम का साईन बोर्ड मिल जाएगा देखने को। कुछ आलोचनाओं को छोड़ दे तो परिवहन और होटल की सुविधा मुहैया करानेवाली ये दोनों कंपनी न केवल तेजी से फैली है बल्कि सस्ती, सुविधाजनक और मानकों पर उत्कृष्ट सेवाएं देने के लिए भी जानी जा रही है। जानकर आश्चर्य होगा कि इन दोनों कंपनीयों के कर्ताधर्ता 30 वर्ष की उम्र से नीचे के है और कारोबार इन्हें पुश्तैनी स्वभाव में नही मिला, बल्कि यह अपने अभिनव विचारों व उस विचार को लेकर किए मेहनत, सहयोग से मिला। ओयो रूम के संस्थापक रितेश अग्रवाल की उम्र लगभग 24 साल है, वही ओला कैब के संस्थापक भविश महज 28 वर्ष के है। दोनों की कंपनियों का सालाना टर्न ओवर अरबों में है।

हैदराबाद के श्रीकांत बाली जब एक मजदुर के घर पैदा हुए, तो ईश्वर ने उन्हें इस दुनिया की खूबसूरती देखने लायक नही बनाया। पड़ोसियों ने नवजात श्रीकांत के जन्म पर जश्न मनाने की बजाए परिजनों को उसे मार देने की सलाह दी। किसी तरह दसवी तक पढ़ने के बाद जब विज्ञान पढ़ने की इच्छा हुई तो उन्हें व्यवस्था से लड़ना पड़ा और लड़ाई लड़कर वे पहले दिव्यांग बने, जिसने दसवी के बाद विज्ञान की पढ़ाई की। मुसीबत यही नही खत्म हुई। आईआईटी में पढ़ने का ख्वाब लिए कोशिश की, मगर खाली हाथ रहे। हिम्मत नही हारी और दुनिया के सबसे मशहूर प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय एमआईटी, अमेरिका में पढ़ने का अवसर मिला। जब पढ़ाई समाप्त हुई तो खुद के लिए नौकरी करने की बजाए अपने जैसे लोगों के लिए एक कंपनी खोल दी, जिसका सालाना टर्नओवर 80 करोड़ है और जिसके सभी कर्मचारी दिव्यांग ही है।

इस वर्ष गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर घोषित किए गए पदम पुरस्कारों की सूची में एक नाम था अरुणाचलम मुरुग्नाथम। अफसोस, इनकी उपलब्धियों के बारे में चर्चा बेहद कम हुई। युवा अरुणाचलम एक पुरुष होते हुए भी महिलाओं के मासिक धर्म संबंधी स्वच्छता के प्रति सजग हुए और पूरी तन्मयता से पिछले कई वर्षों से स्वच्छता व सामाजिक जागरूकता के अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए अविरत लगे हुए है। सेनेटरी नैपकिन पैड की आवश्यकता का महत्व समझाने, बताने और उसे घर घर तक पहुचाने के उदेश्य से वे कार्य कर रहे है। उनका मानना है कि यह छोटी सी चीज महिलाओं व किशोरियों को स्वास्थ्य व आत्म सम्मान दे सकती है। उनकी इस पूरी कवायद से विद्यालयों में बच्चियों की उपस्थिति भी बढ़ी है। उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य विभाग

के आंकड़े बताते है कि तकरीबन 28 लाख किशोरियां मासिक धर्म के कारण स्कूलों से अनुपस्थित रहती है। समझा जा सकता है, अरुणाचलम का कार्य कितना महत्व रखता है।

अभी हाल ही में केंद्र सरकार ने स्टार्ट अप इंडिया नाम से एक योजना का शुभारंभ किया। 16 जनवरी 2016 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जब इस योजना की घोषणा की तो नए उद्दमियों ने, विशेषकर युवाओं ने इसका भरपूर स्वागत किया। कारण, नए विचारों व तकनीकी के इस्तेमाल से कार्य करने के इच्छुक अनेकों युवा धन के अभाव व सरकारी सहयोग का वातावरण न होने की वजह से सुप्त पड़े थे, उन्हें इस योजना से अपने अधूरे स्वप्नों को पूरा करने की आस जगी। इस योजना के तहत सरकार ने नया उद्यम शुरू करने के इच्छुक स्टार्ट अप कारोबारियों के लिए तीन वर्ष तक कर से छुट देने, इंस्पेक्टर राज मुक्त परिवेश और वित्तपोषण के लिए 10,000 करोड़ रुपये का कोष स्थापित करने सहित कई तरह की प्रोत्साहनों की घोषणा की।

अगर हम ऊपर की सभी पात्रों व घटनाओं को डिकोड करे तो कुछ बातें ध्यान में आती है. पहली, देश का युवा लीक से हटकर कुछ करना चाहता है और ऐसी चाहत रखनेवाले युवाओं की संख्या बढ़ती चली जा रही है। वह अब अपनी इच्छाओं को ही अपना करियर बनाना चाहता है, जहाँ उसे जीवन जीने लायक व्यवस्था तो मिले ही, दूसरों के लिए कुछ बेहतर करने के अपने प्रयास का मौका भी मिले। अगर कही कोई शक हो तो किसी भी शैक्षणिक परिसर का एकबार मुआयना कर ले, जो जीवंत दीखता है और जहाँ शैक्षणिक माहौल अच्छा दिखाई देता है। आप देखेंगे कि शिक्षकेतर गतिविधियों में युवा विद्यार्थियों की रूचि बढ़ रही है। वे अपने खाली वक्त को जाया करना नही पसंद करते बल्कि उसका उपयोग किसी रचनात्मक कार्यों में करना चाहते हैं। एक तरफ फाइन आर्ट्स, सामाजिक कार्य जैसे विषयों में रूचि बढ़ रही है तो दूसरी तरफ स्वयंसेवी संस्थाओं से जुड़कर वे जरुरतमंदों की सेवा करने की चाह रखते है। दूसरी, सरकार सामाजिक सहयोग से देश का विकास हो, यह चाहत रखती तो है, मगर उसके लिए साझा प्रयास करने से अबतक बचती रही है। अब सरकार ने नए सिरे से इस दिशा में सोचना शुरू किया है ताकि रोजगार पैदा करने के साथ साथ आर्थिक समृद्धि भी संभव हो सके और इस हेतु छोटे छोटे प्रयासों को बढ़ावा दिया जा रहा है। मेक इन इंडिया और स्टार्ट अप इंडिया जैसे योजनाओ की वजह से एक माहौल बना है, सुविधाएं मिली है। इसलिए यह अच्छा अवसर है, नए उद्यमी बनने लायक लोगों की पहचान व उसे प्रोत्साहित करने का, जो नवाचारी स्वभाव के हो और जो समाज के लिए कुछ करने की चाह रखते हो। तीसरी बात जो बहुत महत्वपूर्ण है, वह यह कि इन सभी मामलों में प्रयास व परिणाम से ज्यादा उनके मूल विचारों का विशेष महत्व है, जिसने उन्हें कुछ अलग करने व कीर्तिमान गढ़ने को प्रेरित किया।

बदलते भारत की यह तस्वीर हमारे लिए एक अवसर है। मौका है, सकारात्मक उर्जा और अभिनव विचारों से लैस युवाओं को अपनी रचनात्मक पहल से एक दिशा देने की। थिंक इंडिया, स्टूडेंट्स फॉर डेवलपमेंट, तंत्र शिक्षण विद्यार्थी परिषद् जैसे प्रकल्प इस कार्य को कर रहा है, मगर इसपर और ध्यान देने व कार्य करने की आवश्यकता है। युवाओं के एक बड़े वर्ग को आज भी रोजाना होनेवाली कैम्पस से लेकर देश दुनिया में हो रही राजनीतिक उठापठक और आन्दोलनों से कोई लगाव नहीं है। वह कुछ नया करने की गुण–धुन में खोया तलाशता रहता है, पढ़ता, घूमता, सोचता रहता है। ऐसे में उसे जहाँ भी मौका मिलता है, वह जुड़ जाता है। मगर अनुभव यही

कहता है कि देश में ऐसी संस्थाएं बड़ी तेजी से पनप रही है, जो न केवल युवा ऊर्जा का शोषण कर रही है, उनके उत्साह का बेजा इस्तेमाल कर रही है बल्कि उनके विचारों को भी देश–समाज विरोधी बनाने का काम करती है। दशा अंततः ऐसी हो जाती है, जहाँ सेवाभाव खत्म, एक्टिविस्ट और विरोध ही उसका स्वभाव और कार्य हो जाता है। ऐसे जगहों पर जाता तो वह गाँव, बच्चों, गरीबों, सामाजिक मुद्दों पर काम करने के लिए, मगर इनकी आड़ में वह उन कार्यों को करने लगता है, जो इनकी मूल सोच से विपरीत होती है। राष्ट्रवादी विचार से परिपूर्ण युवा ही नही, उन विचारों से लबरेज होकर कार्य करने के इच्छुक युवाओं पर केन्द्रित कार्य भी हमें करने होंगे। शैक्षणिक परिसरों में रचनात्मक गतिविधियाँ बढ़ानी होगी। आंदोलन जारी रहे लेकिन आंदोलनों से विरत तेजस्वी मन हमसे अछूता न रहे, इसकी भी कोशिश पूरी रणनीति से करनी होगी। परिषद् कार्यकर्ताओं के लिए ऐसे युवाओं के बीच और सक्रियता व रचनात्मक दृष्टिकोण से कार्य करने का यह अनुकूल अवसर है।

पिछले दिनों प्रधानमंत्री के भाषण से एक परिषद् कार्यकर्ता की सफलता की जानकारी मिली, जो हम सबके लिए गर्व करने लायक है। वे है परिषद् से जुड़े मित्रों के सहयोग से कारोबारी बने अपने कार्यकर्ता मिलिंद काम्बले। एक कथित दलित की मौत पर हो रही राजनीति के साए में मिलिंद प्रेरक उदाहरण है। उन्होंने परिषद् की पाठशाला से सांगठनिक क्षमता की प्रारंभिक सूझ–बुझ हासिल की। देशहित में व्यक्तित्व निर्माण से जुड़ी इस अविरल धारा से जुड़ने के बाद कुछ अलग करने की इच्छा हुई तो परिषद् के सम्पर्क में बने मित्रों के सहयोग से कारोबार शुरू किया। आज दलित समाज के उद्यमियों के लिए राष्ट्रव्यापी संगठन 'दलित चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री' (DICCI) बनाकर हजारों रोजगार पैदा करने व देश के लिए आर्थिक प्रगति का द्वार तो खोल ही रहे है, सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता पर आधारित समाज बनाने की राह भी प्रशस्त कर रहे है। देश ऐसे ही मिलिंद जैसे कारोबारी, अशोक भगत, मनन चतुर्वेदी जैसे समाजसेवी बड़ी संख्या में देने की अपेक्षा हमसे रखता है, जिनकी जड़े राष्ट्रवादी विचारों से सिंची हो और जो दूसरों के लिए प्रेरक बन सकें। ऐसे युवाओं को तलाशिए, तराशिये और उन्हें प्रेरित प्रोत्साहित करिए। यथासंभव सहयोग कर आदर्श स्थापित करनेवाले इन्हें नायक बनाए। ज्ञान, शील, एकता के विचारों की त्रिवेणी रचनात्मक युवाओं के मन का संगम पाकर एक दिव्य छटा बिखेरेगी, जिसकी रौशनी में अपना भारत और बेहतर बनेगा। हमने किया है, हम और कर सकते है।

(लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं और शिक्षा क्षेत्र में सक्रिय है।)

■

अभाविप का मोबाइल ऐप
डाउनलोड
करने की लिंक आपको
ABVP के
अधिकारिक अकाउंट
http://www.facebook.com/ABVPVOICE
https://twitter.com/abvpcentral
पर और वेबसाइट
www.abvp.org
पर भी उपलब्ध रहेगी।

विदेशी छात्रा से दुर्व्यवहार के विरोध में अभाविप का प्रदर्शन

दिल्ली। बैंगलुरू में तंजानिया की एक छात्रा के साथ भीड़ द्वारा की गयी हिंसा के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) ने दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय में कर्नाटक सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। कर्नाटक सरकार व पुलिस के खिलाफ नारे लगाते हुए और हाथों में 'कर्नाटक सरकार गेट वेल सून' और 'अंतरराष्ट्रीय छात्र – हम तुम्हारे साथ हैं' की तख्तियां लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेज के विद्यार्थियों ने विवेकानंद की प्रतिमा तक मार्च किया, जहाँ अभाविप के छात्र–नेताओं ने विद्यार्थियों को संबोधित किया।

गौरतलब है कि बैंगलुरू के कॉलेज में अध्ययन करने वाली एक विदेशी युवती के साथ भीड़ द्वारा न केवल दुर्व्यवहार किया गया बल्कि उनके कपडे फाड़कर उन्हें घुमाया गया। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार वहां मौजूद पुलिसकर्मियों ने भी छात्रा की मदद नहीं की। यहाँ तक कि घटना के तुरंत बाद जब युवती प्राथमिकी दर्ज कराने के लिए थाने पहुंची तो पुलिस ने उनकी रिपोर्ट दर्ज करने से मना कर दिया। इस घटना के बाद विद्यार्थी समुदाय में गहरा रोष जताया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने घटना की निंदा करते हुए त्वरित कार्यवाही किये जाने की मांग की है।

प्रदर्शनकारी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए अभाविप के प्रदेश मंत्री साकेत बहुगुणा ने कहा कि यह घटना अत्यंत शर्मनाक है और विश्वपटल पर भारत की छवि को नुकसान पहुंचाने वाली है। उन्होंने कहा कि कर्नाटक सरकार कानून व्यवस्था सुचारु रूप से चलाने में विफल साबित हुई है। साथ ही पीड़िता के प्रति पुलिस के रवैये पर भी प्रश्नचिन्ह है। उन्होंने कहा कि परिषद् मांग करती है कि इस मामले में तुरंत कार्यवाही करते हुए हमारी विदेशी बहन को शीघ्र न्याय सुनिश्चित होना चाहिए।

प्रदेश मंत्री ने कहा, 'अतिथि देवो भवः की संस्कृति वाले हमारे देश में इस प्रकार की घटना होना चिंताजनक है। सभी युवाओं को आगे बढ़कर हमारे देश में पढ़ रहे विदेशी विद्यार्थियों के साथ सही व्यवहार हेतु समाज को जागरूक करना होगा। हम भारत में पढ़ रहे सभी विदेशी छात्रों से निवेदन करते हैं कि इस दुखद घटना की वजह से भयभीत न हों, हम सभी विद्यार्थी आपके साथ हैं।' ■

एकात्मता की राह पर 'अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन' का प्रवास

✍ अश्विनी परांजपे-राजवाड़े

सूरज की पहली किरण से आलोकित होने वाला उत्तर–पूर्व भारत यानि अरुणाचल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर और नागालैंड। उत्तर–पूर्व की धरती को ब्रम्हपुत्र ने पावन किया है, यह ब्रम्हा की भूमि है, शक्तिपीठ कामाख्या की भूमि है। भगवान शिव ने महादानव त्रिपुरासुर का वध करके इस धरती को पावन किया है, जिसका वर्णन शिवपुराण में मिलता है। विभिन्न जनजातियों, विभिन्न पर्वतों–पठारों में विभाजित यह सुन्दर क्षेत्र एवं इसकी परम्पराएं भारत का गौरव गान हैं।

अरुणाचल का परशुराम कुण्ड परशुराम के पूर्वोत्तर में अस्तित्व का साक्षी है। ऐसा कहा जाता है कि प्रायश्चित हेतु परशुराम ने दक्षिण–पश्चिम प्रदेश की यात्रा के पूर्व इसी कुण्ड में स्नान किया था। इसका वर्णन भी कलिका पुराण में मिलता है।

अरुणाचल प्रदेश की एक जनजाति 'इदु मिश्मी' है, उनकी ऐसी मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण की पत्नी रुक्मणी इदु मिश्मी कुल से ही थीं। महाभारत के अरण्य पर्व में महाबली भीम का पूर्व क्षेत्र में आने का वर्णन मिलता है। भीम की पत्नी हिडिम्बा इसी क्षेत्र से थीं।

मेघालय में खासी जनजाति के लोग धनुष बाण चलाते समय अंगूठे का उपयोग नहीं करते परन्तु इस जनजाति के लोग ये अवश्य कहते हैं कि इनके पूर्वज ने गुरु दक्षिणा के रूप में अंगूठा दान किया था। कुछ विद्वानों का कहना है की खासी जनजाति से एकलव्य आते थे।

रामायण काल में सीता हरण के पश्चात् सीता मय्या को खोजने के लिए चारों दिशाओं में राजा सुग्रीव के द्वारा अपने लोगों को भेजने का उल्लेख आता है। असम के कर्बी जनजाति के लोग अपने आप को सुग्रीव का वंशज मानते हैं। कर्बी रामायण अर्थात साबिन अलून के अनुसार वे लोग त्रेता युग में सीता माता को ढूंढते हुए उत्तर–पूर्व में पहुंचे थे और फिर वापस नहीं आये।

नागालैंड के बड़े शहर दीमापुर के बारे में कहा जाता है कि यह भीम की पत्नी हिडिम्बा के नाम पर हिडिम्बापुर था जो अपभ्रंशित होकर दीमापुर हो गया। यहां के कीरत लोग मानते हैं कि महाभारत काल में वर्णित कचारिश राजवंश के लोग उनके पूर्वज थे। कचारिश राजवंश की शुरुआत भीम के पुत्र घटोत्कच ने की थी। वैसे ही असम के बोडो आदिवासी स्वयं को ब्रम्हा के वंश मनाते हैं। जिन्होंने धर्मान्तरण नहीं किया है उन्हें ब्रम्होइस्म का समर्थक या ब्रम्ह्वादी कहा जाता है।

महाभारत के अनुसार चित्रांगदा अर्जुन की पत्नी थी जो मणिपुर मूल की थी। इनके पुत्र का नाम बब्रुवाहन था। अर्जुन की एक और पत्नी उल्फी और उनके पुत्र इरवान का सम्बन्ध नागा जनजाति के थान्गकुल से मिलता है।

इसी प्रकार त्रिपुरा का नाम त्रिपुर सुंदरी देवी के नाम पर रखे जाने का भी उल्लेख मिलता है। यहाँ पर ययाति वंश के राजाओं ने कई वर्ष तक राज किया। कालांतर में भारतीय संस्कृति से सराबोर इस क्षेत्र में संकट के बादल छाने लगे। अलगाववादी तत्व सक्रीय होने लगे। चीन द्वारा भी यहाँ सेंध लगाई जाने लगी और यह क्षेत्र संवेदनशील हो गया।

भारत चीन के मध्य हुए पंचशील समझौते के पश्चात तत्कालीन सरकार हिंदी–चीनी भाई भाई के सपनों में मस्त थी। चीन युद्ध की तैयारी कर रहा था और हम गाफिल थे। हमारी सरकार ने कभी सोचा भी नहीं था, कि चीन हम पर कभी आक्रमण करेगा। चीन जब उसकी सीमा पर रोड बना रहा था तब सावरकर जी ने कहा था कि चीन आक्रमण कर सकता है, तब उनकी बात को अनसुना किया गया। हमारी तत्कालीन सरकार ने सामरिक तैयारियों पर ध्यान नहीं दिया। ऐसे माहोल में चीन ने सन 1962 में भारत पर आक्रमण कर दिया और चीनी सेना उत्तर पूर्व

भारत में घुस आई। पूर्वोत्तर भारत के अरुणाचल और कुछ अन्य भूभाग को हथियाने की मंशा चीन रखता आया है, जिसके लिए चीन के कूटनीतिक प्रयास चलते रहते हैं। मुर्गे की गर्दन की तरह दिखने वाला एक गलियारा जिसे 'चिकन नेक' पट्टी कहते हैं जो पूर्वोत्तर भारत को शेष भारत से जोड़ता है जिसकी चौड़ाई कहीं कहीं तो मात्र 16 किमी. ही है। इसके एक ओर नेपाल और एक ओर बांग्लादेश है यह सामरिक दृष्टी से एक संवेदनशील क्षेत्र है।

नागालैंड की बात करें तो नागा क्षेत्र भी भारत स्वतंत्र होने के पश्चात् असम और नार्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी के बीच विभाजित रहा स्वतंत्रता के पश्चात् 1952 मे यह क्षेत्र केंद्र शासित प्रदेश बन गया तथा 1961 में नागालैंड को भारत संघ में राज्य का दर्जा दिया गया। जिसका विधिवत उद्घाटन 1 दिसम्बर 1963 को हुआ। ब्रिटिश शासनकाल के दौरान नागालैंड में बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण हुआ जिसके कारण 92.2 प्रतिशत इसाई एवं 7.7 प्रतिशत हिन्दू रह गए। इसाई मिशनरीज का अलगाववादी तत्वों को समर्थन प्राप्त होने के कारण एक गुट भारत में अलगाववाद की मांग करता रहा और नागालैंड में भी अस्थिरता की स्थिति लगातार बनी हुई है।

देश के तीन राज्य जहाँ इसाई लोग बहुमत में हैं मेघालय, मिजोरम और नागालैंड पूर्वोत्तर में ही आते हैं यदि मेघालय की तरफ दृष्टी डालें तो मेघालय की जनजातीय आबादी पूरी जनसंख्या का 85 प्रतिशत है। 50 प्रतिशत आबादी खासी जनजाति की है जबकि दूसरे स्थान पर गारो जनजाति आती हैं। ब्रिटिश शासन काल में योजनाबद्ध तरीके से इनका धर्मान्तरण किया गया। किसी संप्रदाय विशेष से परहेज ना होकर अलगाववाद से परहेज है क्योंकि धर्मान्तरण के नाम पर उन्हें भारत की जड़ों से दूर किया गया है। अलगाववाद भारत के हित शत्रुओं द्वारा भारत को तोड़ने के लिए किया गया सोचा समझा प्रयास है। भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में अलगाववाद को समाप्त कर राष्ट्रवाद की बयार बहाने का कार्य 'अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन' ने किया है।

सन 1965 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के दो कार्यकर्ता श्री पद्मनाभ आचार्य एवं श्री दिलीप परांजपे उत्तर पूर्व भारत के भ्रमण के लिए गए। तब उन्होंने महसूस किया की आवश्यकता है हमारे उत्तर पूर्व के भाई बहनों को यह बताने की कि पूरा भारतवर्ष आपके साथ खड़ा है, आवश्यकता है पूर्वोत्तर भारत और शेष भारत में संवाद स्थापित करने की। विविधता में एकता की हमारी संस्कृति को बल देने की आवश्यकता महसूस हुई और 'अंतर राज्य छात्र जीवन दर्शन' की संरचना खड़ी की गई। यह प्रकल्प अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के अंतर्गत प्रारम्भ किया गया। जिसने अलगाववाद और अस्थिरता के माहौल में एकात्मता स्थापित करने के लिए संजीवनी का काम किया। विविधता में एकता भारतीय संस्कृति का आधार है अतः सील द्वारा इस भाव को जगाया गया कि मेरा देश मेरा घर है मेरा भारत मेरा घर है एवं भारत को जानने के लिए सील के अंतर्गत 'मेरा घर मेरा भारत' (My Home India) प्रकल्प का शुभारम्भ हुआ। 1966 में 'मेरा घर मेरा भारत' के अंतर्गत सर्वप्रथम पूर्वोत्तर के चयनित 17 छात्र मुंबई जाकर रहे उस समय जो छात्र मेजबान परिवारो में जाकर रहे और अपनेपन का अनुभव किया वह सम्बन्ध अगली पीढ़ी तक निरंतर रहने के उदाहरण भी विद्यमान हैं। जिनमे से एक छात्र लेकी फुन्गसो जो तिब्बत बॉर्डर के तवांग गाँव का रहने वाला था पढाई के लिए 16 वर्ष तक सुधीर फड़के जी के घर पर रहा और पढाई पूरी की। उसने अपना नाम दीपक लिखवाया और अपने नाम के साथ सुधीर जी का नाम जोड़ा अर्थात दीपक सुधीर फड़के। दीपक के साथ यह नाम जीवन भर के संबंधों में परिवर्तित हो गया। दीपक (लेकी फुन्गसो) पढाई पूरी कर वापस पूर्वोत्तर गया और अपने गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया लेकिन सुधीर जी से सम्बन्ध निरंतर रहे। पुत्री रत्न की प्राप्ति होने के पश्चात् उन्होंने सुधीर जी को सूचित किया की आप दादा बन गए हैं। सुधीर जी उनके आदर्श थे उनकी मोबाइल स्क्रीन पर आज भी उनका फोटो

मिलता है। इतना ही नहीं भविष्य में उन्होंने अपनी बेटी को लॉ की पढाई के लिए सुधीर फड़के जी के घर पर रखा। यह उदहारण हम भारतवासियों के लिए एक प्रेरणा है।

यह SEIL के अंतर्गत किया गया प्रथम प्रयास था SEIL का यह कार्य निरंतर चलता रहा। आज SEIL ने अपने 50 साल पूरे किये हैं और भारतीय एकात्मता यात्राओं (SEAL Tour) का दौर जारी है।

पूर्वोत्तर के लोगों से एकता के भाव मजबूत करने की दृष्टी से 1978 में पहली एकात्मता यात्रा सम्पन्न हुई। जिसमें श्री गेगांग अपांग भी यात्रा के प्रतिनिधि थे जो बाद में 24 वर्ष तक अरुणाचल के मुख्यमंत्री रहे।

लेखी संगमा गारो हिल्स की रहने वाली है जो गारो जनजाति से है। लेखी संगम सील यात्रा में शामिल हुई। भारत के विविध क्षेत्रों को जाना और आपसी सौहार्द की अनुभूति की। वहां से लौटने के बाद पादरी ने उसे कहा कि तुम हिन्दुओं के साथ क्यों गई वहां मत जाना तो उसने दृढ़ता से जवाब दिया की मुझे वहां किसी तरह की परेशानी नहीं हुई। मैंने अपने भारत को जाना और विविधता होते हुए भी एकता का अनुभव किया। वही लेखी संगमा सील की भावना से स्थाई रूप से जुड़ गई और उस समय जब उत्तर पूर्व मे अलगाववाद का बोलबाला था ये अलगाववादी लोगों को आतंकित कर रहे थे ऐसे वातावरण में 15 अगस्त को तिरंगा फहराने के लिए लोगों को प्रेरित किया, उन्हें संबल दिया और स्वयं नेतृत्व करते हुए तिरंगा फहराया। इस प्रकार SEIL ने युवाओं में राष्ट्रीय भावना को जागृत कर सीमावर्ती क्षेत्रों में राष्ट्रवाद को मजबूत किया है। भारत को मजबूत किया है।

विगत वर्ष 50 वर्ष पूर्ण होने के निमित्त सील टूर 'भारत को जानो' यात्रा के दौरान भी सील के प्रतिनिधियों ने भारत का भ्रमण किया। भारत को जानने के लिए जब पूर्वोत्तर के विद्यार्थी बनारस गए उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर के दर्शन किये, माँ गंगा की आरती की। जिन्होंने गंगा जी को माँ का दर्जा दिया हो वह भारत से अलग कैसे हो सकते हैं।

वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की कर्मभूमि झाँसी में भी पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों की यह यात्रा पहुंची जहाँ वे बुन्देलखंडी लोकनृत्यों के माध्यम से बुंदेलखंड की संस्कृति से परिचित हुए। झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई के किले पर जाकर जब उनकी वीरता का दर्शन किया, अध्ययन किया तब उन्हें पूर्वोत्तर की रानी माँ अर्थात स्वातंत्र्य योद्धा रानी गाईदिंल्यु याद आई जिन्होंने अंग्रेजों की गुलामी से नागा समाज को मुक्त करने के लिए लड़ाई लड़ी साथ ही नागालैंड को भारत से अलग करने की मंशा रखने वाले मीजो तथा नागा नेशनल काउंसिल (N.N.C.) के विरुद्ध भी सशस्त्र संघर्ष किया। अपनी हराक्का सेना का नेतृत्व करते हुए भारत के लिए लड़ने वाली रानी गाईदिंल्यु (रानी माँ) को स्वतंत्रता के पश्चात् अलगाववादी तत्वों ने भी मारने का षडयंत्र रचा था। रानी की सेना इन अलगाववादियों से भी लड़ी और 1964 में भारत सरकार में युद्ध विराम की घोषणा के बाद रानी को सुरक्षा देकर भारत सरकार ने इतिहास की पांच प्रमुख नारियों में रखते हुए उनके नाम से भी स्त्री शक्ति पुरस्कार प्रारंभ किया। यही पुरस्कार रानी लक्ष्मी बाई के नाम से भी दिया जाता है। झाँसी की रानी की वीरता और बलिदान को ध्यान में रखकर राष्ट्र प्रेम की प्रेरणा के साथ झाँसी से पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों ने विदा ली। जम्मू, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, त्रिवेंद्रम, ओडीशा आदि विभिन्न स्थानों में जाकर पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय एकात्मता के दर्शन किये।

सील के अंतर्गत असम गुवाहाटी में युवा विकास केंद्र (YVK) के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं साथ ही रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जाते हैं। YVK के अंतर्गत शिक्षा सूचना केंद्र के माध्यम से पूर्वोत्तर के बाहर कही भी शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले विद्यार्थियों को व्यवस्था एवं जानकारी प्राप्त होती है। सर्वप्रथम 1965 में आये वे दो कार्यकर्ता जिनके मन में SEIL जैसे कार्य को करने का विचार आया उनमें से एक श्री पद्मनाभ आचार्य आज

नागालैंड एवं असम के राज्यपाल हैं यह संयोग ही है।

आजतक सील के माध्यम से भारत के 3000 परिवारों के पूर्वोत्तर से पारिवारिक सम्बन्ध स्थापित हुए हैं। यह परिवार साथ रहकर सांस्कृतिक आदान–प्रदान के माध्यम से पूर्वोत्तर से समरस हुए हैं। इन मेजबान परिवारों में रहे 1500 विद्यार्थी अर्थात पूर्वांचल के 1500 परिवार पूर्वांचल में भारत के शक्ति केंद्र हैं और इन्ही शक्ति केन्द्रों के माध्यम से सारा उत्तर पूर्व, 'भारत मेरा घर' इस भावना से ओतप्रोत हो रहा है। प्रतिवर्ष पूर्वांचल से छात्रों के रूप में युवावर्ग आता रहेगा भारत को समझता रहेगा और वापस जाकर वहाँ राष्ट्रवाद का अलख जगाता रहेगा। विविधता में एकता के तत्व को मजबूत करेगा। सांस्कृतिक धरोहर को मजबूत करेगा। यह सिलसिला चलता रहेगा... अविरत चलता रहेगा और एक दिन वह आएगा जब अलगाववादियों के चंगुल से छूटे हुए वे लोग भी एक स्वर से गायेंगे ....

अनंत तारे गगन एक है,
अगणित किरणे सूर्य एक है,
विविध रंग हो चित्र एक है,
साज अलग पर सूर एक है,
भाषा बोली भले अलग हो,
समरसता का मर्म एक है,
विविध नाद का ब्रम्ह एक है,
वेश अलग सन्देश एक है।

■

तीसरा दिल्ली विश्वविद्यालय मॉक इंडियन पार्लियामेंट सम्पन्न

छात्र संसद में भव्य राम मंदिर निर्माण को हरी झंडी

नई दिल्ली। विपक्षी दलों के विरोध के बीच संसद ने राम मंदिर पुनर्निर्माण व रखरखाव विधेयक, 2016 को भारी बहुमत से पारित कर दिया। दो दिन तक लगातार चली बहस के बाद हुए मतदान में विधेयक के पारित होते ही संसद परिसर जय श्री राम के नारों से गूंज उठा।

चौंकिए मत! यह नारा भारतीय संसद का नहीं, देश के युवाओं की संसद का है। देश की संसद में भले ही राम मंदिर को लेकर राजनेता एकसुर से बात करने से बचते हो, छात्रों के संसद ने इसे राष्ट्र की अस्मिता और पहचान से जोड़ते हुए इस विधेयक को मंजूरी दी। साथ ही अयोध्या में भव्य राम मंदिर बनने की उत्कट अभिलाषा प्रकट की। विदित हो, देश का युवा ज्वलंत राजनीतिक मुद्दों पर क्या सोचता है, इसे जानने समझने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के नेतृत्व में विगत 16–17 जनवरी, 2016 को 'तीसरी दिल्ली विश्वविद्यालय मॉक इंडियन पार्लियामेंट' कांफ्रेंस सेंटर में आयोजित की गई। दो दिवसीय इस आयोजन में छात्रों ने लोकसभा में राम मंदिर निर्माण पर बहस की। साथ ही, राज्यसभा में जीएसटी विधेयक पर तार्किक व लोकतांत्रिक दायरे में रहते हुए बेहतर चर्चा हुई, जो असली संसद में विरले ही देखने को मिलती है। इन दोनों विधेयकों के अलावा आरक्षण की समीक्षा व आईएसआईएस के खतरों पर भी विशेष सत्रों का आयोजन हुआ, जिसमें प्रतिभागी छात्रों ने दोनों मुद्दों पर गंभीर व तथ्यात्मक बहस किए।

कार्यक्रम में प्रसिद्ध वकील प्रशांत मेंदिरत्ता, अभाविप दिल्ली प्रदेश उपाध्यक्ष रजनीश जिंदल, राष्ट्रीय सह–संगठन मंत्री श्रीनिवास ने अपनी उपस्थिति से प्रतिभागियों का मनोबल बढाया। इस आयोजन में देशभर के प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों से तकरीबन 300 प्रतिभागी शामिल हुए। समापन समारोह में विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र, स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

■

चर्चा में

रोहित वेमुला आत्महत्या मामला

हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्र रोहित वेमुला की आत्महत्या का मुद्दा देश में और कैंपस में गरमाया हुआ है। गौरतलब है कि गत 17 जनवरी को रोहित ने आत्महत्या की थी। रोहित अंबेडकर स्टूडेंट्स एसोसिएशन से जुड़ा हुआ था। इस संगठन ने संसद पर हमले के साजिशकर्ता आतंकवादी अफजल गुरू की फांसी का विरोध किया था। बाद में मुंबई सीरियल बम धमाकों के जिम्मेदार याकूब मेनन की फांसी का भी विरोध किया, विरोध करनेवालों में रोहित वेमुला भी थे। ऐसी राष्ट्रविरोधी गतिविधियों का अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने विरोध किया। वहीं, केंद्रीय मंत्री बंडारू दत्तात्रेय ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय को पत्र लिखकर कैंपस में होने वाली राष्ट्रविरोधी गतिविधियों से अवगत कराया। पांच छात्रों को छात्रावास से निलंबित कर दिया गया। कुछ दिनों बाद रोहित ने आत्महत्या की। इस मुद्दे पर राजनीतिक दलों के नेता राजनीतिक रोटियां सेंकने लगे। कांग्रेस उपाध्यक्ष राहुल गांधी और आम आदमी पार्टी के नेता व दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल समेत अनेक दलों के नेता हैदराबाद दौड़ गए। राजनीतिक बयानबाजी भी की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रोहित की आत्महत्या पर कहा कि इस मुद्दे पर राजनीति नहीं होनी चाहिए, एक मां ने अपना बेटा खोया है। इस पूरे प्रकरण को छात्र किस रूप में देखते हैं, आइए जानते हैं उनके विचार–

आतंकवादियों की पैरोकारी राष्ट्रविरोधी कृत्य

हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्र रोहित वेमुला की आत्महत्या दुःखद है लेकिन यह भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि वे एक ऐसे छात्र संगठन से जुड़े थे जो कैंपस में आतंकवादियों के पक्ष में अभियान चलाता था। बेगुनाहों की हत्या करनेवाले जिन आतंकवादियों को सर्वोच्च न्यायालय फांसी की सजा दे चुका हो, उनकी पैरोकारी करना दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं अपितु राष्ट्रविरोधी कृत्य है।

रामप्रसाद त्रिपाठी, दिल्ली विश्वविद्यालय

आत्महत्या समस्या का समाधान नहीं

आत्महत्या समाधान नहीं है बल्कि समस्या है। रोहित वेमुला की आत्महत्या के बाद इस प्रवृत्ति का जहां नकार होना चाहिए था, वहीं इसे ग्लैमराइज किया जा रहा है जो कि दुर्भाग्यपूर्ण है। तमिलनाडु में योगा मेडिकल कॉलेज की तीन छात्राओं ने आत्महत्या कर ली। अब जेएनयू में एक छात्र ने आत्महत्या करने की धमकी दी है। कठिन समय हर छात्र के जीवन में आता है, उससे भागना नहीं चाहिए अपितु उसका दृढ़ता से मुकाबला करना चाहिए।

अनु कुमारी, कॅरिअर प्वाइंट विश्वविद्यालय कोटा

जातिवाद से मुक्त हो कैंपस

रोहित वेमुला के केस पर जिस तरह से राजनीति हो रही हैं, उसने राजनीति के गिरते स्तर को और नीचे गिराने का काम किया है। कैंपसों को राजनीतिक दलों का अड्डा नहीं बनने देना चाहिए। अच्छा होता अगर रोहित के मामले को एक छात्र की परेशानी के रूप में व्यक्त किया जाता न कि समुदाय विशेष के रूप में। कैंपसों को जातिवाद के महारोग से भी बचाना होगा।

सुप्रिया सिंह, माखनलाल विश्वविद्यालय, भोपाल

राजनैतिक रोटियां सेंक रहे राजनेता

रोहित वेमुला की खुदकुशी से राजनेताओं से ज्यादा छात्रों को सीख लेने की जरूरत है, वरना वो यूं ही राजनीति का शिकार होते रहेंगे। नेताओं को कैंपस में शिक्षा से कोई लेना–देना नहीं वे अपनी राजनैतिक रोटियां सेंकते हैं। राष्ट्रवाद–जातिवाद को अपने तरीके से परिभाषित कर छात्रों को गुमराह किया जाता है। राजनीतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए राजनेता किसी की लाश पर भी राजनीति शुरू कर देते हैं।

हिमांशु झा, इंदिरा गांधी नेशनल मुक्त विश्वविद्यालय

'सा विद्या या विमुक्तये'

✍ डॉ. ललित बिहारी गोस्वामी

भारतीय चिंतन बड़ी साधना, साक्षात्कार और सघन अनुभूतियों में से निष्पन्न हुआ है। इह और इहलोक से परे जो कुछ भी है, सबको अपने आपमें समेट अभ्युदय और निश्रेयस् दोनों को यह जीवन का लक्ष्य स्वीकार करता है।

लक्ष्य प्राप्ति, बिना साधना संभव नहीं। इसीलिए कर्म इसके मूल में है। कर्म, बिना विचारे नहीं होता। विचारयुक्त कर्म का लक्ष्य साक्षात्कार है। 'कोऽहं' मैं कौन हूँ? से लेकर 'अथा तो ब्रह्मजिज्ञासा'–ब्रह्म विषयक जिज्ञासा के लिए कर्म वा साधना का विधान है।

यह लंबी साधना 'अहं ब्रह्मास्मि' अथवा तो 'शिवोऽहं, शिवोऽहं' तक ले जाती है। हम अपने ब्रह्मत्व या कहें शिवत्व की खोज कर उसका साक्षात्कार करते हैं। इसे जानने के बाद कुछ और जानना शेष नहीं रहता। इसे पाने के बाद कुछ और पाना शेष नहीं रहता। यह खोज, यह अनुसंधान ही तो विद्या है। यही अमृतत्व है जो विद्या का परिणाम है, यही है मुक्ति! जो यह मुक्ति प्रदान कर सके वही विद्या है।

यह विद्या फिर मनुष्य की सभी इच्छाओं का अंत कर देती है, उसे सुख–दुःखदि द्वंद्वो के अतीत से ऊपर उठा देती है। यह विद्या मनुष्य के सभी भयों (औपनिषदिक ओदेश है–मा भैः), सभी श्रृंखलाओं, सभी बंधनों, सभी कुंठाओं, सभी मर्यादाओं, सीमाओं, परिधियों के पार ले जाती है। सबसे मुक्ति। ठीक यहीं भारतीय मनीषा एक प्रश्न कर बैठती है कि अपनी मुक्ति, केवल अपनी मुक्ति! क्या ठीक है? यह भी कहीं स्वार्थ तो नहीं, निपट स्वार्थ? क्या यही हमारे लिए काम्य है? इसका उत्तर पूरी परंपरा एक स्वर हो 'नहीं' में देती है। केवल स्वार्थ मनुष्य को संवेदनहीन बनाता है, उसे मनुष्य ही नहीं रहने देता। चाहे मुक्ति ही क्यों न हो, केवल मेरे लिए तो हम अपनी सीमाओं से ऊपर कहां हो पाए? जो मेरे लिए है, मेरा है, वह तो हमेशा रह ही नहीं जाएगा? रह ही नहीं पाएगा। रहेगा वही जो सबका है। केवल ज्ञान मनुष्य मन को स्वार्थी और शुष्क बनाएगा। संवेदनहीन मन अनुभूति–प्रवण तभी बनेगा, जब उसमें भाव भरेगा, भक्ति का अधिष्ठान जब मन बनेगा, जब सघन अनुभूतियों से हृदय सम्पन्न बनेगा। साधन और साक्षात्कार के साथ सघन अनुभूति नहीं तो विद्या नहीं। सघन अनुभूति 'मैं' को तोड़ 'हम' की संज्ञा धारण कराती है। तभी वास्तव में विद्या मिली, ऐसा माना जाएगा। अध्यात्म को अपनी सामाजिक भूमिका जब मिलती है, तभी विद्या अर्थवती होती है। ब्रह्म, प्रभु आदि जितनी भी संज्ञाएं हैं, वे सब विस्तार की ओर संकेत करती हैं। विस्तृत अर्थात सीमाहीन। पूरा संसार, ब्रह्माण्ड जिसके रोम रोम में है, ऐसा विस्तार। गीता में कृष्ण का विराट् रूप यही नहीं था क्या? इसीलिए तो कंकर कंकर में शंकर का उद्घोष हम कर सके, इसीलिए तो तुलसी 'सियाराम भय सब जग जानी, करहुं प्रनाम जोरि जुग पानी; लिख सके। उनका नाम केवल अयोध्या तक सीमित नहीं। जहां–जहां वह जाता है, अयोध्या अपना विस्तार करती जाती है–'अवध तहां जहं राम निकसू' और राम तो सब जग में है। कृष्ण क्या वृंदावन तक सीमित रह गया? जहां वह गया, वहीं तो वृंदावन बन गया। दिक्, काल सब कुछ पीछे छूट जाता है, उसकी भी कोई सीमा नहीं। इस असीम के प्रतीक, प्रतिनिधि, स्वरूप शंकर, राम, कृष्ण हैं।

सर्वत्र व्याप्त ये तीनों जब भारतीय मन में बैठ गए तब वह सघन अनुभूतियों से भी भर गया। इसी की वाञ्छा भारतीय करता है। भरत जी यही मांगते हैं–'धरम न अरथ न काम रुचि, पद न चहऊं निर्वान। जनम–जनम रति राम पद यह वरदान त आन।।' राम–पद–रति उन्हें सबका बनाती है। भक्त नरसी मेहता वैष्णव की परिभाषा देने के लिए जिन गुणों की गणना करते हैं उनमें पराई पीर जानना सर्वप्रथम है,

फिर उपकार और इसी तरह के गुण। आधुनिक मैथिलीशरण गुप्त भी 'मुक्ति मुक्ति मांगे क्या तुमसे, हमें भक्ति दो अमिताभ' कर ही उच्चार करते हैं। 'जगन्मिथ्या' मानने वाले आदि शंकर भी तो 'भज गोविन्दम्' की रटना लगाते हैं। मंत्र गुह्य है, इसलिए एकांत में जपना, ऐसा आदेश गुरुवर ने रामानुज को दिया था। लेकिन रामानुजाचार्य ने जोर–जोर से मंत्र प्रारंभ कर दिया। गुरु के पूछने पर यही कहा था न उन्होंने मैं केवल अपनी मुक्ति नहीं चाहता, सबकी मुक्ति हो, यही मेरी कामना है। गुरुवर आप यदि कोई दंड भी देंगे तो इस हेतु मैं उसे स्वीकार करूंगा। गुरु ने भी उन्हें अपने हृदय से लगा लिया था।...

श्रीमद्भागवत ने भी तो इसीलिए धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष से भी ऊपर पंचम पुरुषार्थ की घोषणा कर दी थी– 'प्रेमः पुमर्थो महान'।

यह प्रेम, यह भक्ति अर्थात सघन अनुभूति जब साधना, साक्षात्कार के साथ मिलेगी तभी विद्या का वास्तविक अर्थ अपने आपको प्रकट करेगा। तभी हृदय विशाल होगा, तभी ऊंचे आदर्शों के प्रति हमारी रूचि बढ़ेगी, तभी हम उनके प्रति प्रतिबद्ध होंगे, तभी हम उनके प्रति शिथिल होंगे, हम जीवन्मुक्त बन सकेंगे। तभी हम संपूर्ण संसार, सारा जग अपना लगने लगेगा, तभी हम संपूर्ण होंगे। विद्या यही पूर्णता तो देती है।

ऐसा पहले भी हुआ है, अब भी हो सकता है, आगे भी होगा। पूरे इतिहास पर यदि दृष्टिपात करेंगे तो एसे जीवन्मुक्तों की अविच्छिन्न, अविरल परंपरा का दर्शन हम कर सकेंगे। यही मुक्तिदायिनी विद्या है।

इस विद्या की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती हैं। शुभ्र धवलवसना मां शारदा 'वीणा पुस्तकधारिणी' हैं। संगीत और साहित्य दोनों ही वाङ्देवी को अलंकृत करते हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि हमारे पूर्वज इन दोनों की ही उपासना समान रूप से करते आए हैं। वेदमंत्रों से लेकर आज तक पूरा वाङ्मय गाया ही गया है। युद्धक्षेत्र में गीता भी गाई गई तो सूर, तुलसी आदि भक्तिकालीन वाग्गेयकारों ने अपने साहित्य को विभिन्न राग–रागिनियों में निबद्ध किया। साहित्य और संगीत ने भारतीय मन को ऐसा सुचिक्कण, स्नेहशील बना दिया कि फिर कुछ और कोई दूसरा और उपासना पराया रह ही नहीं गया। सब अपने हुए। आज हम उनके वंशधर वासंती रंग में सराबोर हो अपरिमित उल्लास से मां वीणावादिनी से यही वर मांगते हैं इस वसंत में हमारे हृदयों को सामरस्य के सामगान से निरंतर झंकृत करती रहे, इसकी यह झंकार संपूर्ण विश्व को गुंजयमान करती हुई समस्त लोकों, ब्रह्माण्डों को आपूरित कर दे।

(लेखक वर्तमान में विद्या भारती के राष्ट्रीय महामंत्री है।)

चंबा में गौ हत्या पर अभाविप ने मांगी कड़ी कारवाई

शिमला। अभाविप ने चंबा में हुई गौ हत्या मामले की कड़ी निंदा की है। अभाविप की विवि इकाई के अध्यक्ष गौरव अत्री ने कहा कि कांग्रेस जबसे सत्ता में आई है, तबसे क्षेत्र में विकास करने में विफल रही है।

उन्होंने आरोप लगाया है कि शिक्षा का स्तर हो या सामाजिक विकास, दोनों ही क्षेत्रों में प्रदेश सरकार नाकाम रही है। पिछले दिनों में चंबा में हुई गो हत्या निंदनीय है। इस मामलें में आरोपियों पर कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए। विद्यार्थी परिषद् इस मुद्दे पर न्यायिक जाच की मांग करती है ताकि लोगों की भावनाओं को ठेस न पहंचे। प्रदेश में कानून व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। पुलिस के मुखिया अपराध ग्राफ कम होने का दावा करते हैं। नाहन में गो तस्करों का जो मामला सामने आया था, उसमें निर्दोष लोगों को जेलों में डाला गया। पुलिस विभाग कांग्रेस के इशारे पर काम कर रही है। हिंदुओं की आस्था के साथ प्रदेश में खिलवाड़ हो रहा है। प्रदेश सरकार जल्द इस मामले पर कारवाई करें अन्यथा उग्र आंदोलन किया जाएगा। ■

वाम राजनीति का विकृत चेहरा

✍ सुनील आंबेकर

हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी में छात्र रोहित वेमुला द्वारा खुदखुशी की घटना दुखद एवं चिंताजनक हैं, परंतु यह किसी भी मायने में दलित व गैर दलितों के बीच की लड़ाई नही है। वास्तव में यह वामपंथियों एवं घोर वामपंथियों द्वारा लगातार चलाई जाने वाली राष्ट्रीय व समाजहित विरोधी गतिविधियों के षड्यंत्र का हिस्सा है, जो अब समाज के सामने आ गया हैं।

वर्तमान में भी इन वामपंथियों द्वारा अपनी राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को चलाने के लिए प्रमुख शैक्षिक परिसरों को केन्द्र बनाकर नौजवान छात्रों को गुमराह किया जा रहा है। वे उन्हें अपनी गतिविधियों मे सम्मिलित कर राष्ट्र के संविधान व व्यवस्था के खिलाफ भड़काकर उनका उपयोग अपनी गतिविधियों को अंजाम देने के लिये करते हैं। यह षड्यंत्र पिछले कुछ समय से नित नये कलेवर में सामने आ रहा है, लेकिन देश के युवा भी अब इन षड्यंत्रकारी गतिविधियों के मंसूबों को समझने लगे हैं।

विभिन्न प्रकार की राष्ट्रविरोधी गतिविधियों का संचालन करने वाले इन वामपंथी, नक्सल समर्थक संगठनों का शैक्षणिक परिसरों में राष्ट्रवादी छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद लगातार प्रतिकार कर रहा है। अभाविप के राष्ट्रवादी विचारों, रचनात्मक परिसर सक्रियता व लगातार किये जाने वाले छात्रहित, समाजहित व राष्ट्रहित के कार्यो के कारण तथाकथित जनवादी व सर्वहारा के खोखले नारों को छात्रों ने समझ लिया है जिससे इन वामपंथियों के पांव शैक्षणिक परिसरों से उखड़ने लगे हैं। इस कारण इनकी बौखलाहट सामने आ रही है। देश में चल रहा यह संघर्ष राष्ट्रवादी एवं राष्ट्रविरोधी विचारधाराओं का संघर्ष है जिसमें अभाविप राष्ट्रवादी छात्र संगठन होने के नाते अपनी भूमिका सजग रूप से निभा रही है।

देश के युवाओं को लोकतंत्र के विरूद्ध उकसाने का क्रम नया नहीं है। दक्षिण में 1980 से पहले ही घोर वामपंथी विचारों के द्वारा देश के युवाओं व ग्रामीण नागरिकों को बहलाकर उन्हें देश विरोधी गतिविधियों में सम्मिलित किया गया था। नक्सलवादी विचारधारा के आधार पर देश को बांटने का प्रयास इन देशद्रोही तत्वों द्वारा तब से ही किया जा रहा था। परंतु देश के जनमानस का भारत के संविधान व व्यवस्था में अटूट विश्वास होने तथा अभाविप द्वारा शैक्षणिक परिसरों में इसका तगड़ा विरोध करने के कारण शिक्षा परिसरों से नक्सलवादी विचारधारा का साया समाप्त हुआ था।

अभाविप के कार्यकर्ताओं ने सदैव अहिंसक प्रणाली का सहारा लिया है किन्तु इन वामपंथियों के हिंसक आंदोलनों का परिसरों में विरोध करने पर हमारे 39 कर्मठ कार्यकर्ताओं की हत्या भी घोर वामपंथियों द्वारा की गई। अभाविप का राष्ट्रवादी आंदोलन कभी भी हिंसक नही हुआ, क्योंकि अभाविप का भारत के संविधान में दृढ़ विश्वास है।

वर्तमान समय में अभाविप के समतायुक्त, शोषण मुक्त, समरस समाज व परिसरों के केवल नारे ही नही अपितु सतत् सेवा कार्य से बौखलाकर घोर वामपंथियों ने दलित आंबेडकर आंदोलन के रूप में भारत के दक्षिण खासकर आंध्रप्रदेश व तेलंगाना में पुराने समय से राष्ट्रहित व समानता हेतु चलाये गये आंबेडकरवादी दलित आंदोलन को हथियाने का प्रयास किया है। मृतवत् राष्ट्रविरोधी वामपंथी आंदोलनों को समझने के लिये यह जान लेना अत्यंत आवश्यक है कि देश में हमेशा आंबेडकरवादी दलित आंदोलन भारत के संविधान के समर्थन में था तथा उनकी संविधान में गहरी निष्ठा थी, परंतु इन वामपंथियों का आंदोलन भारतीय संविधान का विरोध करने के लिये किया जा रहा है। वास्तविक आंबेडकरवादी दलित आंदोलन भारत के राष्ट्रध्वज तिरंगे के सम्मान, भारतीय लोकतंत्र व व्यवस्था में पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ा तथा सदैव अहिंसक रहते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर कभी समझौता नही किया एवं राष्ट्रप्रेम व भारत के प्रति निष्ठा से परिपूर्ण रहा।

लेकिन इन वामपंथियों द्वारा जबरन कब्जा करते हुए

उस राष्ट्रवादी आंदोलन के नाम पर देश में राष्ट्रविरोधी गतिविधियां चलाने का कार्य जिनमें तिरंगे का अपमान करना, लोकतंत्र व्यवस्था को उखाड़ने का प्रयास तथा राष्ट्रद्रोही याकूब मेनन जैसे लोगों का समर्थन करना इनका ध्येय बन गया है। इन वामपंथियों ने याकूब की फांसी का विरोध ही नही किया, बल्कि इन्होंने उसके द्वारा की गई राष्ट्रद्रोही गतिविधियों का समर्थन किया है। यहां बहस का मुद्दा याकूब को फांसी या उम्रकैद नही हैं अपितु यहां मुद्दा है उस देशद्रोही का समर्थन करते हुए उसे गद्दार की बजाय नायक के रूप में प्रस्तुत करने का। हैदराबाद केन्द्रीय युनिवर्सिटी में इनका नारा था – " तुम कितने याकूब मारोगे–हर घर से याकूब निकलेगें",

इस प्रकार के राष्ट्रविरोधी आंदोलनों व अभियानों को वामपंथियों (नक्सलवादियों) द्वारा हैदराबाद यूनिवर्सिटी परिसर में चलाया गया, जिसका हिस्सा खुदखुशी करने वाला छात्र रोहित भी रहा। आंबेडकर स्टूडेंट एसोसियेशन (ASA) द्वारा लगातार भारतीय संविधान की मर्यादा के विपरीत कार्य विश्वविद्यालय परिसर में किये जा रहे है, जिनका प्रतिकार अभाविप ने किया। ऐसे में छात्र की खुदखुशी के नाम पर हो रही राजनीति में अभाविप को शामिल करना कहां तक उचित है।

अभाविप ने सदैव दलितों पर अत्याचारों का विरोध किया हैं तथा प्रारंभ से ही दलितों के हितों के लिये संघर्ष करते हुए उन्हें समान अधिकार एवं सम्मानजनक स्थान दिलाने हेतु अभाविप ने समाज कल्याण छात्रावासों का देशव्यापी सर्वेक्षण, उनमें व्याप्त समस्याओं को व्यापक स्तर पर उठाते हुए केन्द्र एवं सभी प्रदेश सरकारों के विरूद्ध उच्चतम न्यायालय का दरवाजा भी खटखटाया है। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने अनुसूचित जाति, जनजाति तथा मंडल आयोग से प्राप्त आरक्षण को समाज की ऐतिहासिक आवश्यकता मानकर पुरजोर तरीके से आरक्षण की पैरवी की हैं तथा निरंतर विभिन्न सहयोगी व सेवा कार्य आज भी जारी है।

यहाँ यह स्पष्ट करना तर्कसंगत है कि अभाविप का दलित आंदोलन को लेकर कोई विरोध नही हैं तथा समूचे हिंदू समाज को भेदभाव मुक्त बनाने के डा. बाबासाहेब आंबेडकर के सपनों को साकार करने के संकल्प को पूरा करने का प्रयास अभाविप निरंतर कर रही है ताकि समाज में कोई सामाजिक असमानता ना रहे तथा समतायुक्त, समरस समाज का निर्माण सुनिश्चित हो सके। डा. बाबासाहेब आम्बेडकर का अभाविप व संघ द्वारा निरंतर प्रातः स्मरण किया जाता हैं तथा 06 दिसम्बर को सामाजिक समरसता दिवस एवं 14 अप्रेल को डा. बाबासाहेब की जयंती मनाना हमारे नियमित कार्यक्रम हैं, इसलिये अभाविप किसी भी प्रकार से दलित विरोधी नही हैं। अपितु अभाविप द्वारा तो व्यापक आंदोलन खड़ा करने के फलस्वरूप 14 जनवरी 1994 (मकर संक्राति) के दिन महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री सुधाकर नाईक ने श्री शरद पंवार, श्री रामदास आठवले, श्री प्रकाश आंबेडकर की उपस्थिति में अभाविप से चर्चा के बाद आश्वस्त होकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय का नामकरण डा. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय किया था, जिससे प्रमाणित होता है कि अभाविप प्रारंभ से ही डा. बाबासाहेब के विचारों का समय–समय पर अनुसरण करती रही है।

यह सर्वविदित है कि डा. बाबासाहेब आंबेडकर जी के विचार कभी भी राष्ट्र को विघटित करने के समर्थन में नही रहे है, आंबेडकरवादी आंदोलन सदैव देशभक्त आंदोलन व अहिंसक आंदोलन रहा है, इसलिये हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय परिसर में कार्य करने वाले अन्य छात्र संगठन दलित स्टूडेंट यूनियन ने भी अपने फेसबुक पोस्ट में याकूब मेनन का समर्थन करने वाले कृत्यों की निंदा की थी, वामपंथियों द्वारा डा. बाबासाहेब के नाम का शैक्षिक परिसरों में दुरूपयोग करते हुए झूठा प्रचार किया जा रहा है। अब हमें समाज व परिसरों में यह बहस उत्पन्न करनी पड़ेगी कि गरीब व दलित समाज के छात्र व युवा कब तक इन षड्यंत्रकारी वामपंथी ताकतों का शिकार बनते रहेंगे।

इस प्रचार अभियान में वामपथियों द्वारा आत्महत्या करने वाले छात्र रोहित को दलित बताकर भी समाज में भ्रम फैलाया जा रहा है तथा अभाविप के जिस छात्र

सुशील पर रोहित व उसके साथियों द्वारा प्राणघातक हमला किया गया था, उसे गैर दलित बताकर इस सम्पूर्ण घटना को दलित व गैर दलित के बीच लड़ाई के तौर पर प्रस्तुत किया जा रहा है। तथ्य यह है कि रोहित वड्डेरा समुदाय से आता है तथा मुनुरू–कापु समुदाय से आने वाल छात्र सुशील तथा वड्डेरा समुदाय से आने वाला रोहित दोनों ही पिछड़े वर्ग से हैं, इसलिये यह वांमपंथियों द्वारा फैलाया जा रहा षड़यंत्र हैं कि दलितों पर गैरदलितों का अत्याचार हो रहा है। वामपंथियों द्वारा सुनियोजित षड्यंत्र के तहत छात्र की खुदकशी पर ओछी राजनीति की जा रही है, जो कि शर्मनाक है।

वामपंथियों द्वारा संचालित आंबेडकर स्टूडेंट एसोसियेशन सदैव हिंसक गतिविधियों के मार्ग पर चल रही है। इसका विरोध करने पर अभाविप के कार्यकर्ता सुशील के साथ मारपीट की गई तथा रात के 1.00 बजे जबरन कक्ष में घुसकर उसे माफी मांगने पर मजबूर किया गया। सुरक्षा अधिकारी उसे कार्यालयीन समय में अपने कार्यालय में बुलाकर बात कर सकते थे। इसके बजाय सुशील के साथ बेरहमी से मारपीट कि गई थी जिसके पश्चात् उसे अस्पताल में भर्ती होना पडा। आंबेडकर स्टूडेंट एसोसियेशन के लोगों द्वारा बुरी तरह पीटने व पेट में गंभीर चोट आने पर उसका इलाज एक निजी अस्पताल (अर्चना हास्पीटल, हैदराबाद) में कराया गया।

बिना वजह मारपीट करने पर सुशील द्वारा विश्वविद्यालय प्रशासन को शिकायत की गई जिस पर विश्वविद्यालय द्वारा दोषी आंबेडकर स्टूडेंट एसोसियेशन के छात्रों को विश्वविद्यालय से निलंबित कर दिया गया परंतु आंबेडकर स्टूडेंट एसोसियेशन व वामपंथियों द्वारा दबाव बनाने के कारण जांच में दोषी छात्रों को पुनः बहाल कर दिया गया।

यहां यह स्पष्ट करना अनिवार्य है कि आंबेडकर स्टूडेंट एसोसियेशन के दोषी छात्रों को छात्रावास से निलंबित करने की कार्यवाही किसी मंत्री के पत्र के कारण नहीं हुई है, क्योंकि संवैधानिक रूप से जनप्रतिनिधि होने के कारण उनके क्षेत्र में हुई घटना को उनके संज्ञान में लाये जाने पर ऐसे किसी विषय पर संबंधित अधिकृत विभाग को पत्र लिखना उनके संवैधानिक अधिकार के दायरे में आता हैं, जहां तक राजनेताओं के किसी मुद्दे पर किसी को पत्र लिखने का विषय है यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत उनका सामान्य अधिकार क्षेत्र है इसलिये इसे लेकर किसी भी राजनेता को दोष दिया जाना हास्यापद हैं।

ऐसे गंभीर एवं संवेदनशील मुद्दे पर देश में राहुल गांधी सहित कई राजनेताओं और उनके दलों द्वारा तर्कहीन एवं वास्तविकता से परे राजनीति की जा रही है जो कि अत्यंत शर्मनाक है। क्या कभी राहुल गांधी ने यह जानने का प्रयास किया है कि देश में नक्सलवादी आंदोलनों में कितने आदिवासियों की हत्याएं हुई है एवं अलीगढ मुस्लिम विश्वविद्यालय में आज तक एससी/एसटी आरक्षण लागू क्यों नहीं किया गया है, अथवा नक्सलवादियों द्वारा कितने अभाविप कार्यकर्ताओं की हत्याएं शैक्षिक परिसरों में की गई और आज इस मुद्दे पर राजनीति करते हुए आंबेडकर स्टूडेंट एसोसियेशन को सही बताने का प्रयास कर रहे हैं तो क्या इसका अर्थ यह माना जाये कि याकूब का समर्थन करने वाले लोगों का समर्थन करके राहुल गांधी भी याकूब मेनन के कृत्य का समर्थन कर रहे हैं। यदि ऐसा है तो यह अत्यंत खेदजनक है।

हैदराबाद सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी प्रकरण में दोषी छात्रों के बहाल हो जाने पर सुशील की माताजी द्वारा न्यायालय की शरण ली गई, जिसके पश्चात न्यायालय द्वारा विश्वविद्यालय को दोषी छात्रों पर की गई कार्यवाही का विवरण प्रस्तुत करने हेतु नोटिस जारी किया गया। इसके पश्चात विश्वविद्यालय द्वारा दोषी आंबेडकर स्टूडेंट एसोसियेशन के 5 छात्रों को केवल छात्रावास से निष्कासित किया गया, जिससे उनके शैक्षणिक कैरियर पर किसी प्रकार का कोई अवरोध उत्पन्न नहीं हुआ था, इसलिये छात्र की आत्महत्या के लिये बेवजह किसी को भी जिम्मेदार मान लेना जिस तरह से तार्किक नही हैं उसी प्रकार से किसी जनप्रतिनिधि को भी उसके लिये दोषी ठहराना अव्यवहारिक है।

इसके साथ ही यहां यह ध्यान देने योग्य विशेष तथ्य है कि रोहित ने अपने मृत्युपत्र में किसी को जिम्मेदार न बताते हुए जिस तरह से पत्र लिखा है उस स्थिति में

रोहित के मित्रों की भूमिका भी संदेहास्पद हो जाती है, क्योकि पूरे समय साथ रहने वाले यह मित्र उस समय कहां थे, जब रोहित ने आत्महत्या की, इसकी जांच होनी चाहिये। यहां यह भी ध्यान देने योग्य तथ्य हैं कि वामपंथी एवं नक्सलवादियों द्वारा हमेशा से ही अपने आंदोलन को केन्द्र में लाने हेतु राजनीति करते हुए सामान्य लोगों को बलि का बकरा बनाया जाता रहा है। ऐसे कई उदाहरण मौजूद है, जिसमें वामपंथियों ने इस प्रकार की ओछी मानसिकता का प्रदर्शन किया है और इन्हें बैठे–बिठाये संवेदनशील मुद्दों पर भी घटिया राजनीति करने का अवसर मिल गया। वर्तमान समय में राष्ट्रवादी विचारों व राष्ट्रविरोधी वामपंथियों के बीच वैचारिक लड़ाई चल रही है जिसमें आत्महत्या जैसे कृत्य का कोई स्थान नही हैं यह मात्र विचारों के आधार पर चल रहा संघर्ष है इसलियें इस पूरे प्रकरण में रोहित के साथियों की संदेहास्पद भूमिका की जांच किया जाना भी अनिवार्य है।

वामपंथी व नक्सलवादियों द्वारा चलाई जाने वाली संविधान विरोधी गतिविधियों एवं डा. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों को आपस में जोडने का कार्य करते हुए यह भ्रम फैलाने का प्रयास देश में हो रहा है, लेकिन यह विचारधारा डा. बाबा साहेब के मतों के बिल्कुल विपरीत है, इसलिये आंबेडकरवादी आंदोलन का चोला ओढ़कर कार्य करने वाले ऐसे राष्ट्रविरोधी संगठनों की सच्चाई देश के सामने आनी चाहिये। उल्लेखनीय है कि डा. बाबासाहेब आंबेडकर ने 20 नवम्बर 1956 को काठमांडू में आयोजित विश्वबौद्ध सम्मेलन में अपने भाषण में कहा था कि दलितों एवं गरीबों के मन में जब तक भगवान बुद्ध के विचार समाहित है, हमें उन्हें अंगीकार करते हुए आगे बढ़ना है तथा किसी भी स्थिति में साम्यवाद या मार्क्स की ओर आकर्षित होने की आवश्यकता नही है। (यह वक्तव्य इन्टरनेट पर उपलब्ध है) अपने वक्तव्य में उन्होंने साम्यवादी विचारों से अपने अनुयायियों को दूर रहने की सलाह दी थी, जबकि आज के समय में वामपंथी व नक्सलवादी डा. बाबासाहेब का चेहरा आगे रखकर देश को भ्रमित करने का कार्य कर रहे है।

देश में चल रहे इस प्रकार के कुत्सित षड्यंत्रों को समाज के सामने लाने की आवश्यकता हैं क्योंकि दलितों व पिछडों के नाम पर राजनीतिक रोटियां सेकने वाले तथाकथित राजनेता व सामाजिक नेता कहां थे जब 2007 में उसी हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी में अभाविप कार्यकर्ता व छात्र संघ में निर्वाचित सांस्कृतिक सचिव श्री मणिदास (एससी समुदाय – केरल) को व 2010 में शारीरिक रूप से अक्षम तपन, बिल्लोरी सतपाल सिंह बेहरा, अंजनेयल्लु आदि छात्रों को हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी से निष्कासित किया गया था। तब क्यों किसी ने इनके हित में आंदोलन नही किये व इनके हक की लडाई लड़ने सामने नही आये। क्योंकि दलित हित व पिछडों के हितों की बात करने वाले ये वामपंथी अपने राजनीतिक एजेंडे के तहत कार्य कर रहे है और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों व वामपंथी व नक्सलवादी विचारधारा के आधार पर राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने (लोकतंत्र द्वारा नही बल्कि हिंसा द्वारा) के उद्देश्य के लिए देश के नौजवानों को भड़काने व भ्रमित करने का प्रयास कर रहे हैं तथा देश के सम्मुख अपने झूठ को प्रसारित करने के लिये डा. बाबासाहेब के नाम की आड़ लेकर लगातार षड्यंत्र चला रहे हैं। वास्तव में ऐसे संदिग्ध लोगों की गतिविधियों व उनके विभिन्न लोगों से हित संबंध व उनकी योजनाओं की विस्तृत जांच किये जाने की आवश्यकता हैं।

अभाविप का आह्वान– देश के सभी वर्गो के नागरिक विशेषकर नौजवान हमारे देश के महापुरूषों स्वामी विवेकानंद, डा. बाबासाहेब आंबेडकर आदि के सच्चे विचारों का अनुकरण करते हुए राष्ट्रहित में समाज के सभी वर्गो, खासकर सामाजिक दृष्टि से पिछडे हुए अनुसूचित जाति, जनजाति व गरीबों के उत्थान, विकास व सम्मान को स्थापित करने हेतु आगे आएं तथा सभी भ्रामक प्रचारों से मुक्त होकर डा. बाबासाहेब आंबेडकर की 125 वीं जन्म जयंती को विशेष निमित्त मानकर कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्रहित के कार्य में जुट जाऐं।

(लेखक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री हैं।)

आस्था और विश्वास का अदभुत समागम

सिंहस्थ
कुंभ महापर्व 2016
विक्रम संवत् 2073

22 अप्रैल - 21 मई, 2016

श्रद्धालुओं के स्वागत को तैयार उज्जैन

शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

www.simhasthujjain.in /SimhasthUjjain2016 /Simhasth

RNI No. 32464/78

छत्तीसगढ़

धान के उत्पादन एवं उत्पादकता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए तीन बार कृषि कर्मण पुरस्कार।

- कुल धान उत्पादन 76 लाख मीटरिक टन।
- राष्ट्रीय स्तर पर धान उत्पादन केवल 3 प्रतिशत बढ़ा। छत्तीसगढ़ में 39 प्रतिशत की बढ़ोतरी।
- कुल अनाज उत्पादन 79.90 लाख मीटरिक टन।
- राष्ट्रीय स्तर पर कुल अनाज उत्पादन में 02 प्रतिशत की वृद्धि, छत्तीसगढ़ में 35 प्रतिशत बढ़ा।
- नलकूपों की संख्या 67839, अतिरिक्त सिंचित क्षेत्र 1,42,934 लाख हेक्टेयर।
- शाकंभरी योजना के तहत 6,557 कूपों से 2,668 लाख हेक्टेयर में अतिरिक्त सिंचाई।
- 1,51,332 पम्पों से 63,077 लाख हेक्टेयर अतिरिक्त सिंचित क्षेत्र का निर्माण।
- शून्य प्रतिशत ब्याज दर पर 2,472 करोड़ रूपये का कृषि ऋण, 917 प्रतिशत बढ़ा।
- 10,40,122 किसान लाभान्वित। 119 प्रतिशत की बढ़ोतरी।
- उद्यानिकी का कुल रकबा 2 लाख हेक्टेयर से बढ़कर 7.5 लाख हेक्टेयर हुआ।